राष्ट्रीय हिंदी पाक्षिक समाचार पत्र

सच्ची व स्टीक खबर, आप तक

गजब हरियाणा

संपादक : जरनैल सिंह सह संपादिका : सृष्टि देवी छायाकार : राजरानी PKL NO.: 0184/2024-26

WWW.GAJABHARYANA.COM 16 दिसंबर 2025, वर्ष : 08, पृष्ठ : 04, अंक : 18, मूल्य : 7 रुपए, वार्षिक मूल्य : 150 रुपए Email: gajabharyananews@gmail.com

ज्ञान विचार

चित में शत्रुता की गाठें बांधने वाला स्वयं अशांत, दुखी रहता है।

किसान सेवा अपनाते हुए प्रदेश की मंडियों को बनाएं रॉल मॉडल : मुख्यमंत्री नायब सिंह सैनी

आधुनिक, पारदर्शी और किसान हितैषी मंडी व्यवस्था बनाएं, फसल खरीद के लिए 12 लाख किसानों के खातों में 1 लाख 64 हजार करोड़ रुपये डाले

गजब हरियाणा न्यूज/डॉ. जरनैल रंगा

चंडीगढ़। हरियाणा के मुख्यमंत्री श्री नायब सिंह सैनी ने कहा कि किसान सेवा को पर्याय बनाते हुए प्रदेश की मंडियों को ऐसा मॉडल बनाएं जिसका अनुसरण पूरा देश करे। इसके अलावा मंडी शुल्क वसूली, व्यवहार में शत-प्रतिशत ईमानदारी बरतें और किसानों का विश्वास बनाएं। इसके साथ ही मंडियों को देश की सबसे आधुनिक, पारदर्शी और किसान हितैषी मंडी व्यवस्था बनाई जाए।

मुख्यमंत्री मार्केटिंग बोर्ड के नवनियुक्त पदाधिकारियों के साथ आयोजित बैठक को अध्यक्षता कर रहे थे। बैठक में मार्केट कमेटियों के चेयरमैन एवं वाईस चेयरमैन के अलावा प्रदेश अध्यक्ष मोहन लाल बड़ौली, संगठन महामंत्री फणीन्द्र नाथ शर्मा, प्रदेश महामंत्री सुरेन्द्र पूनियां, डॉ. अर्चना गुप्ता, मुख्यमंत्री के ओएसडी बी बी भारती सहित कई वरिष्ठ अधिकारियों ने भाग लिया।

मुख्यमंत्री ने कहा कि मार्केटिंग बोर्ड के पदाधिकारियों की नींव अन्नदाता की समृद्धि और प्रदेश की अर्थव्यवस्था की मजबूती टिकी हुई है। मंडी व्यवस्था किसानों के पसीने की कमाई को सही मूल्य और सम्मान दिलाने का सबसे महत्वपूर्ण माध्यम है जिससे किसान सशक्त होगा तो हरियाणा प्रदेश सशक्त होता है।

मुख्यमंत्री ने कहा कि मार्केट कमेटियां सिर्फ सरकारी दफ्तर नहीं हैं, बल्कि ग्रामीण अर्थव्यवस्था के शक्ति केंद्र हैं। इसलिए सबसे बड़ी जिम्मेदारी मंडियों का उचित प्रबंधन करना है। साथ ही, किसान और व्यापारी के आपसी संबंधों को ओर अधिक विश्वसनीय व मजबूत बनाना है। उन्होंने कहा कि मंडियों में ऐसी व्यवस्था बनाना है जहां किसान को उपज लाते ही सही माप, मूल्य और समय पर भुगतान मिले और व्यापारी को गुणवत्तापूर्ण उत्पाद और व्यापार करने का बेहतर वातावरण मिले।

मुख्यमंत्री ने कहा कि मार्केट कमेटियों ने पिछले कुछ वर्षों में डिजिटल क्रांति को अपनाने में सराहनीय कार्य किया है। ई-खरीद और डी.बी.टी. को सफलतापूर्वक सुनिश्चित किया है ताकि, किसान के खाते में उसकी फसल का पैसा सीधे और समय पर पहुंचे। बिचौलियों की भूमिका को खत्म कर, किसानों को उसकी मेहनत का पूरा हक दिलवाया है। मुख्यमंत्री ने कहा कि गेट पास जारी करने से लेकर मंडी शुल्क की वसूली तक हर प्रक्रिया को पूर्ण रूप से डिजिटल बनाना होगा, ताकि कार्य में पारदर्शिता बनी रहे। भ्रष्टाचार की जड़ें काटने के लिए हमें और अधिक टेक्नोलॉजी को अपनाना होगा। मुख्यमंत्री ने कहा कि किसानों की सभी 24 फसलों की खरीद न्यूनतम समर्थन मूल्य पर की जा रही है। अब तक 12 लाख किसानों के खातों में फसल खरीद के 1 लाख 64 हजार करोड़ रुपये डाले जा चुके हैं। उन्होंने कहा कि खरीफ सीजन-2024 से किसानों की फसल खरीद का पैसा फसल का गेट पास कटने के 48 घंटे के अन्दर डी.बी.टी. के माध्यम से दे दिया जा रहा है। प्रदेश भर की मंडियों में शेड, पीने का पानी, शौचालय और किसानों के लिए विश्राम गृह जैसी मूलभूत सुविधाओं को बेहतर बनाने का काम तेजी से हुआ है। मुख्यमंत्री ने कहा कि फल-सब्जी उत्पादक किसानों के लिए फार्म-गेट के पास कोल्ड स्टोरेज की व्यवस्था करना सरकार की प्राथमिकता है। उन्होंने कहा कि मार्केट कमेटियों के पदाधिकारी अपने क्षेत्र में पी.पी.पी. मॉडल के तहत कोल्ड स्टोरेज स्थापित करने के प्रस्तावों को प्राथमिकता दें। मंडियों तक पहुंचने वाली सड़कों की मरम्मत और कनेक्टिविटी को बेहतर बनाएं ताकि, किसानों को मंडियों में अपनी उपज लाने में कोई परेशानी न हो। मुख्यमंत्री ने कहा कि मार्केट कमेटी के कर्मचारियों की कार्यशैली और व्यवस्थाएं मंडी व्यवस्था का असली चेहरा होता है। इसलिए यह सुनिश्चित किया जाए कि मार्केट कमेटी के कर्मचारी किसान के प्रति संवेदनशील हों। उन्हें नवीनतम सरकारी नीतियों, ई-पोर्टल के उपयोग और किसान से विनम्र संवाद करने का उचित प्रशिक्षण दिया जाए।

मुख्यमंत्री ने कहा कि हरित मंडी, खुशहाल किसान नामक नई पहल शुरू की जाए। इससे किसान को पारंपरिक फसलों के अलावा मंडियों में फल और सब्जियों के लिए अलग सेक्शन को मजबूत करना होगा। उन्होंने कहा कि हर मंडी में किसान सहायता केंद्र स्थापित करें, जहां शिकायतें तुरंत दर्ज हों और उनका समयबद्ध तरीके से समाधान सुनिश्चित करें ताकि किसान को किसी भी शिकायत के लिए दफ्तरों के चक्कर न लगाने पड़ें। मुख्यमंत्री ने कहा कि मार्केट कमेटियों में बिजली की जरूरतों को पूरा करने के लिए सौर ऊर्जा को अपनाना चाहिए।

इससे बिजली का बिल कम होगा और पर्यावरण संरक्षण में भी अहम योगदान दिया जा सकेगा। इसके अलावा हरित ऊर्जा को बढ़ावा दें और पानी की बर्बादी रोकने के लिए मंडियों में अनिवार्य रूप से रेन वॉटर हार्वेस्टिंग स्ट्रक्चर को स्थापित करें। मुख्यमंत्री ने कहा कि प्राकृतिक खेती करने वाले किसानों की उपज बेचने के लिए मंडियों में विशेष स्थान और प्राथमिकता दी जानी चाहिए। यह भविष्य की खेती है और इसे अत्यधिक प्रोत्साहित किया जाना चाहिए। महिला किसानों द्वारा लाई गई उपज को बेचने और महिला व्यापारियों के लिए मंडियों में सुरक्षित स्थान सुनिश्चित करें और अर्थव्यवस्था में महिलाओं की भागीदारी को बढ़ाएं। मुख्यमंत्री ने कहा कि मंडियों में स्वच्छता बनाए रखना हमारी सामूहिक जिम्मेदारी है। इसके लिए मंडियों में नियमित रूप से सफाई अभियान चलाएं और गंदगी फैलाने वालों के खिलाफ सख्त कार्रवाई करें। साफ-सुथरी मंडी व्यापार और स्वास्थ्य दोनों के लिए बेहतर है।

सीएम विंडो की हर शिकायत जनता के विश्वास का प्रतीक, इसे जीवंत दस्तावेज मानकर हो ईमानदार समाधानः सैनी

गजब हरियाणा न्यूज/डॉ. जरनैल रंगा

चंडीगढ़। हरियाणा के मुख्यमंत्री नायब सिंह सैनी ने कहा कि सीएम विंडो पर दर्ज होने वाली प्रत्येक शिकायत केवल एक औपचारिक प्रविष्टि नहीं, बल्कि जनता के विश्वास का जीवंत दस्तावेज है। इससे जुड़े प्रबुद्धजनों की जिम्मेदारी है कि वे इन शिकायतों को पूरी ईमानदारी, विश्वास और पारदर्शिता के साथ देखकर उनके समाधान में सक्रिय योगदान दें। चूंकि ये प्रबुद्धजन सीधे मुख्यमंत्री से जुड़े हैं, इसलिए जनता के प्रति उनकी जवाबदेही और भी अधिक बढ़ जाती है। मुख्यमंत्री सोमवार को अपने निवास स्थान 'संत कबीर कुटीर' में प्रदेश के सभी जिलों से आए सीएम विंडो से जुड़े प्रबुद्धजनों के साथ सीधा संवाद कर रहे थे। उन्होंने कहा कि हम सभी को मिलकर सीएम विंडो को ऐसा सशक्त और भरोसेमंद सिस्टम बनाना है, जिस पर हर नागरिक को गर्व हो और उसे यह विश्वास हो कि उसकी शिकायत का समयबद्ध और प्रभावी समाधान निश्चित रूप से होगा। इस विश्वास के कायम रहने से प्रशासनिक तंत्र भी और अधिक निष्ठा एवं संवेदनशीलता के साथ कार्य करेगा। मुख्यमंत्री नायब सिंह सैनी ने बताया कि आमजन की समस्याओं के त्वरित समाधान के उद्देश्य से 25 दिसंबर, 2014 को सीएम विंडो पोर्टल की शुरुआत की गई थी। अब तक इस पोर्टल पर कुल 14 लाख 82 हजार 924 शिकायतें प्राप्त हुई हैं, जिनमें से 14 लाख 12 हजार 136 शिकायतों का समाधान किया जा चुका है। यह इस बात का प्रमाण है कि सरकार जनसमस्याओं के समाधान को सर्वोच्च प्राथमिकता दे रही है। उन्होंने कहा कि जब कोई नागरिक सीएम विंडो पर अपनी समस्या दर्ज करता है, तो वह केवल शिकायत नहीं लिखता, बल्कि अपने मुख्यमंत्री और सरकार पर भरोसा जताता है। इसलिए इस मजबूत मंच का पारदर्शी और संवेदनशील होना अत्यंत आवश्यक है, ताकि जनता का यह भरोसा और अधिक सुदृढ़ हो सके।

आजादी के आंदोलन में भी मीडिया की रही अहम भूमिकाः आरती सिंह राव

गजब हरियाणा न्यूज़/ब्यूरो

चंडीगढ़। हरियाणा की स्वास्थ्य मंत्री आरती सिंह राव ने कहा कि आजादी के आंदोलन में भी मीडिया की अहम् भूमिका रही है। आज सूचना के अनेक माध्यम हैं, लेकिन फिर भी लोगों का प्रिंट मीडिया पर विश्वास है, यह विश्वास ही प्रिंट मीडिया की सबसे बड़ी पूंजी है। स्वास्थ्य मंत्री आज चंडीगढ़ में 'द कन्फेडरशन ऑफ़ न्यूज़पेपर एंड न्यूज़ एजेंसी एम्पलॉयज' ऑर्गेनाइजेशन की 'ऑल इंडिया मीडिया मीट' में बतौर मुख्य अतिथि बोल रही थी। उन्होंने मीडिया को समाज का चौथा स्तंभ बताते हुए कहा कि स्वतंत्रता आंदोलन में प्रिंट मीडिया ने सत्ता से प्रश्न पूछने का साहस किया और जनता की आवाज़ बनकर खड़ा हुआ। यही कारण है कि प्रिंट मीडिया का महत्व केवल खबरों तक सीमित नहीं रहा, बल्कि उसने समाज को सोचने, समझने और सही-गलत में फर्क करने की दृष्टि भी दी। स्वास्थ्य मंत्री ने प्रिंट मीडिया का महत्व बताते हुए कहा कि जब इलेक्ट्रॉनिक मीडिया का विस्तार हुआ, विशेषकर टेलीविजन के माध्यम से खबरें घर-घर तक पहुँचने लगीं, तब यह माना जाने लगा कि अब प्रिंट मीडिया का प्रभाव कम हो जाएगा। लोगों को लगा कि तेज़ गति, दृश्य प्रभाव और लाइव रिपोर्टिंग के कारण टीवी समाचार पत्रों की जगह ले लेगा। उस समय कई विशेषज्ञों ने यह भी भविष्यवाणी की कि आने वाले वर्षों में अख़बार इतिहास बन जाएंगे। लेकिन समय ने यह साबित कर दिया कि ये आशंकाएँ पूरी तरह सही नहीं थीं। इलेक्ट्रॉनिक मीडिया के आगमन के बावजूद प्रिंट मीडिया की साख, विश्वसनीयता और गंभीरता बनी रही। उन्होंने सोशल मीडिया का जिक्र करते हुए कहा कि इस डिजिटल बूम के समय में एक बार फिर यह सवाल उठा कि क्या अब प्रिंट मीडिया की भूमिका सीमित हो जाएगी? मगर सच्चाई यह है कि सोशल मीडिया के उभार के साथ-साथ प्रिंट मीडिया की जिम्मेदारी और भी बढ़ गई है। आज जब कोई बड़ी घटना घटती है, तो लोग सोशल मीडिया पर सबसे पहले उसकी चर्चा जरूर करते हैं, लेकिन अंतिम विश्वास वे अब भी प्रिंट मीडिया या विश्वसनीय समाचार स्रोतों पर ही करते हैं। आरती सिंह राव ने कहा कि प्रिंट मीडिया का सामाजिक महत्व पहले भी था, आज भी है और भविष्य में भी रहेगा। माध्यम बदल सकते हैं, तकनीक बदल सकती है, लेकिन सत्य, विश्वास और जिम्मेदारी की आवश्यकता कभी समाप्त नहीं होगी। और जब तक ये मूल्य ज़िंदा हैं, तब तक प्रिंट मीडिया की भूमिका को नकारा नहीं जा सकता। उन्होंने हरियाणा सरकार द्वारा मान्यता प्राप्त पत्रकारों को दी जा रही सुविधाओं की विस्तार से जानकारी देते हुए बताया कि हरियाणा सरकार द्वारा 15 हजार रुपये मासिक पेंशन दी जा रही है और रोडवेज की बसों में एक वर्ष में 4000 किलोमीटर तक फ्री यात्रा की सुविधा दी जा रही है। इस अवसर पर स्वास्थ्य मंत्री आरती सिंह राव ने कई नियमित रक्तदाताओं को सम्मानित भी किया।

खेलो इंडिया यूनिवर्सिटी गेम्स में कुवि का शानदार प्रदर्शन

सृष्टि/गजब हरियाणा

कुरुक्षेत्र। कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय के कुलपति प्रोफेसर सोमनाथ सचदेवा के कुशल नेतृत्व एवं मार्गदर्शन में कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय ने खेलो इंडिया यूनिवर्सिटी गेम्स में उल्लेखनीय उपलब्धि हासिल करते हुए देशभर की 232 विश्वविद्यालयों की कड़ी प्रतिस्पर्धा के बीच 13वां स्थान प्राप्त किया। यह उपलब्धि विश्वविद्यालय के खेल इतिहास में एक महत्वपूर्ण मील का पत्थर मानी जा रही है। इस शानदार प्रदर्शन पर कुलपति प्रो. सोमनाथ सचदेवा ने विजेता एवं प्रतिभागी खिलाड़ियों को बधाई देते हुए कहा कि विश्वविद्यालय खिलाड़ियों को सभी मूलभूत सुविधाओं के साथ-साथ आधुनिक खेल सुविधाएं पलब्ध कराने हेतु नई योजनाएं लागू करेगा।

उन्होंने विश्वास व्यक्त किया कि इन प्रयासों से खिलाड़ियों को भविष्य में और बेहतर प्रदर्शन करने की प्रेरणा मिलेगी तथा उनकी राष्ट्रीय व अंतरराष्ट्रीय उपलब्धियों में निरंतर वृद्धि होगी। खेल निदेशक प्रो. दिनेश राणा ने जानकारी देते हुए कहा कि विश्वविद्यालय का खेल निदेशालय खिलाड़ियों को उच्चस्तरीय प्रशिक्षण देने और उन्हें निरंतर प्रोत्साहित करने के उद्देश्य से पूर्णतः प्रतिबद्ध है।

उन्होंने कहा कि खिलाड़ियों को प्रशिक्षण, अभ्यास, प्रतियोगिता, आवास, यात्रा तथा आवश्यक संसाधनों से संबंधित सभी सुविधाएं पलब्ध कराने के लिए खेल निदेशालय निरंतर प्रयासरत है। खेलो इंडिया यूनिवर्सिटी गेम्स में इस वर्ष कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय की सहभागिता अत्यंत सफल, सुव्यवस्थित एवं प्रेरणादायक रही। इस प्रतिष्ठित राष्ट्रीय प्रतियोगिता में विश्वविद्यालय के 126 खिलाड़ियों ने भाग लिया। इनमें से 75 खिलाड़ियों ने व्यक्तिगत स्पर्धाओं में सहभागिता की, जबकि वॉलीबॉल (पुरुष एवं महिला), बास्केटबॉल (महिला) एवं कबड्डी (महिला) टीमों ने टीम स्पर्धाओं में विश्वविद्यालय का प्रतिनिधित्व किया। उन्होंने बताया कि देशभर के 4448 खिलाड़ियों द्वारा 23 खेलों में हुई कड़ी प्रतिस्पर्धा के दौरान कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय के खिलाड़ियों ने उत्कृष्ट प्रदर्शन करते हुए कुल 17 पदक (3 स्वर्ण, 7 रजत एवं 7 कांस्य) अर्जित किए। उल्लेखनीय है कि पिछले खेलो इंडिया यूनिवर्सिटी गेम्स में विश्वविद्यालय ने 14वां स्थान प्राप्त किया था, जबकि इस वर्ष एक स्थान की छलांग लगाते हुए 13वां स्थान हासिल किया गया, जो विश्वविद्यालय की निरंतर प्रगति को दर्शाता है।

राज्यपाल प्रो. असीम कुमार घोष ने पंचकूला के मदर टेरेसा साकेत ऑर्थोपेडिक अस्पताल का किया निरीक्षण

गजब हरियाणा न्यूज/ब्यूरो

पंचकूला। हरियाणा के राज्यपाल प्रो. असीम कुमार घोष ने आज पंचकूला स्थित मदर टेरेसा साकेत ऑर्थोपेडिक अस्पताल का दौरा कर अस्पताल में उपलब्ध सुविधाओं का निरीक्षण किया। उनके साथ उनकी धर्मपत्नी श्रीमती मित्रा घोष भी उपस्थित रहीं।

निरीक्षण के दौरान राज्यपाल ने डॉक्टरों, नर्सों और अन्य कर्मचारियों से बातचीत कर अस्पताल में प्रदान की जा रही चिकित्सा सेवाओं की विस्तृत जानकारी प्राप्त की। उन्होंने अस्पताल में उपलब्ध चिकित्सा उपकरणों, बुनियादी ढांचे और विशेषज्ञ सेवाओं के बारे में भी जानकारी ली । विशेष रूप से हड्डी रोग उपचार, पुनर्वास और आघात प्रबंधन के क्षेत्र में उच्च मानकों को बनाए रखने के लिए उन्होंने अस्पताल प्रबंधन की सराहना की। राज्यपाल ने प्रथम तल पर स्थित ऑपरेशन थियेटर का निरीक्षण किया और वहां उपलब्ध उपकरणों की जानकारी ली।

ऑपरेशन थियेटर में ओटी टेबल और सीआरएम मशीन की आवश्यकता पर उन्होंने अस्पताल की निदेशक डॉ. रानी सिंह को शीघ्र प्रस्ताव तैयार कर भेजने के निर्देश दिए। उन्होंने कहा कि आवश्यक उपकरणों के लिए फंड की कोई कमी नहीं होने दी जाएगी। इसके अलावा, मरीजों की सुविधा के लिए स्ट्रेचर लिफ्ट लगाने तथा इसके लिए जल्द प्रस्ताव भेजने के निर्देश भी दिए। उन्होंने कहा कि गर्मी के मौसम में मरीजों को कोई असुविधा न हो, इसके लिए वेटिंग एरिया में पर्याप्त संख्या में एसी लगाने की व्यवस्था की जाए। सफाई व्यवस्था की समीक्षा करते हुए राज्यपाल ने निर्देश दिया कि पुरुष एवं महिला शौचालयों की प्रतिदिन साफ-सफाई सुनिश्चित की जाए। राज्यपाल प्रो. असीम कुमार घोष ने अस्पताल प्रबंधन को आश्वासन दिया कि समाज सेवा के उनके प्रयासों में लोक भवन की ओर से हर संभव सहयोग प्रदान किया जाएगा। उन्होंने डॉक्टरों और चिकित्सा कर्मचारियों के समर्पण की सराहना की। इस अवसर पर राज्यपाल के सचिव डी.के. बेहरा, उपायुक्त सतपाल शर्मा, पुलिस उपायुक्त सृष्टि गुप्ता, अस्पताल की निदेशक डॉ. रानी सिंह, एसडीएम श्री चंद्रकांत कटारिया सहित अस्पताल के डॉक्टर एवं स्टाफ सदस्य उपस्थित रहे।

आपका अपना पसंदीदा समाचार पत्र

गजब हरियाणा

दैनिक समाचार पत्र में अपने बिजनेस व्यापार व दुकान आदि के व्यापार को बढ़ावा देने के लिए उचित दामों में विज्ञापन देने के लिए संपर्क करें :

मो. 98179-93233

98888-82924

संपादकीय.....

शिक्षा का व्यवसायीकरण, ज्ञान का बाजार या भविष्य का संकट?

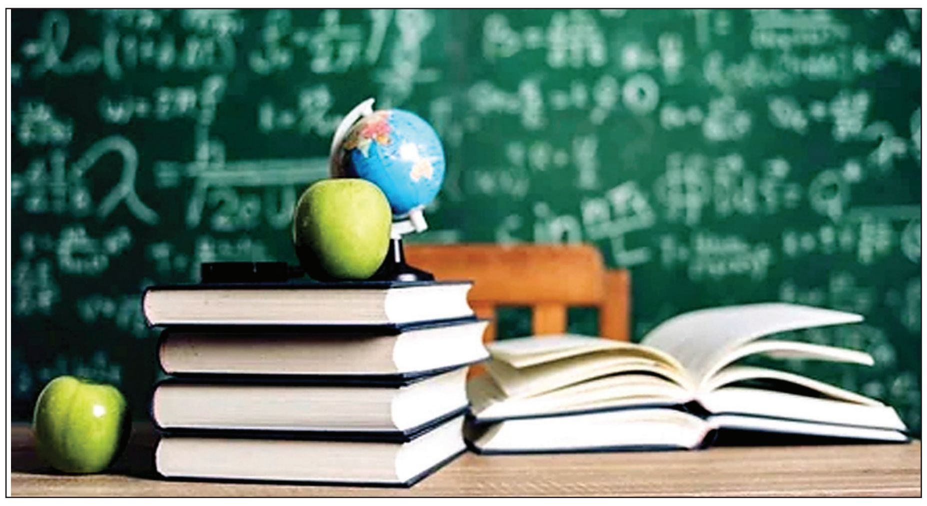

शिक्षा मूल रूप से ज्ञान देने और अच्छे इंसान बनाने का माध्यम है, लेकिन आज यह एक बड़ा व्यवसाय बन गया है। प्राइवेट स्कूल, कोचिंग सेंटर और महंगे कोर्स बिक रहे हैं जैसे कोई सामान। गरीब बच्चे बाहर रह जाते हैं, जबकि अमीरों के बच्चे आगे बढ़ते हैं। यह असमानता बढ़ा रहा है और शिक्षा का असली मकसद भटक गया है। सरल शब्दों में कहें तो शिक्षा अब 'पढ़ाओ कमाओ' का धंधा बन चुकी है।

सरकार के स्कूलों में शिक्षक कम, क्लासरूम पुराने और सुविधाएं घटिया हैं। ऐसे में माता-पिता प्राइवेट स्कूलों की ओर भागते हैं, जहां फीस 50 हजार से लाखों तक। कोचिंग इंडस्ट्री जैसे कोटा में सालाना अरबों का कारोबार है। कैपिटेशन फीस, डोनेशन लेकर एडमिशन और किताबें-यूनिफॉर्म सब महंगे। ऑनलाइन कोर्सेज ने भी बाजार गर्मा दिया। कॉलेजों में भी मैनेजमेंट कोटा से पैसे कमाए जाते हैं। नतीजा- शिक्षा पहुंच से बाहर हो गई।

गरीब परिवारों के बच्चे पढ़ाई छोड़ मजदूरी करने लगते हैं। अमीर-गरीब की खाई बढ़ी। गुणवत्ता पर ध्यान कम, नंबर लाने पर जोर। छात्र तनाव में जीते हैं, सुसाइड के मामले बढ़े। असली ज्ञान के बजाय रट्टा मारना सिखाया जाता है। नौकरी के लिए डिग्री जरूरी, लेकिन स्किल नहीं मिलती। लड़कियां सबसे ज्यादा प्रभावित, क्योंकि फीस न दे पाने पर पढ़ाई बीच में छूट जाती है। समाज में भ्रष्टाचार बढ़ा, क्योंकि अच्छी नौकरी के लिए पैसे चाहिए।

सरकार ने राइट टू एजुकेशन कानून बनाया, जिसमें 6-14 साल के बच्चों को मुफ्त शिक्षा का अधिकार दिया। समग्र शिक्षा अभियान से सरकारी स्कूल बेहतर हो रहे। स्कॉलरशिप, मिड-डे मील और ई-लर्निंग से मदद मिल रही। प्राइवेट स्कूलों पर फीस कंट्रोल के नियम बने। लेकिन अमल कमजोर है। कोटा कोचिंग पर सुप्रीम कोर्ट ने गाइडलाइंस दीं। भविष्य में फ्री कोर्सेज और वोकेशनल ट्रेनिंग बढ़ानी चाहिए।

शिक्षा को सस्ता और सबके लिए बनाएं। सरकारी स्कूलों में अच्छे शिक्षक भरें, स्मार्ट क्लास लगाएं। प्राइवेट स्कूलों की फीस तय करें, डोनेशन बंद। कोचिंग सेंटर्स को रेगुलेट करें। माता-पिता लोकल अच्छे स्कूल चुनें। बच्चे खेल-कूद और स्किल सीखें। एनजीओ और समाज मिलकर गरीब बच्चों को स्पॉन्सर करें। ऑनलाइन फ्री प्लेटफॉर्म जैसे यूट्यूब, खान एकेडमी इस्तेमाल करें। असली शिक्षा वो जो इंसान बनाए, न कि नौकरी का टिकट। शिक्षा व्यवसाय न बने, बल्कि सबका अधिकार बने। अगर हम सब जागरूक हों तो नई पीढ़ी मजबूत बनेगी। देश का भविष्य शिक्षा पर टिका है- इसे बाजार न बनने दें। चलें, सस्ती और अच्छी

उत्तर

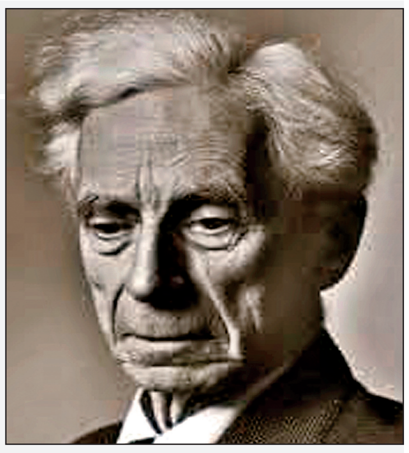

बर्ट्रेंड रसेल ने लिखा है कि मैं बच्चा था तो मैं सोचता था कि फिलासफी पढ़ूंगा, दर्शन शास्त्र पढ़ूंगा, तो मुझे सब उत्तर मिल जाएंगे। अब जब मैं बूढ़ा हो गया हूं, नब्बे वर्ष पार कर रहा हूं, तब मैं यह कहना चाहता हूं कि वह मेरी बड़ी भूल थी कि मैं सोचता था कि सब प्रश्नों के उत्तर मिल जाएंगे। अब मैं नब्बे वर्ष में जानता हूं कि जो उत्तर बचपन में उत्तर मालूम पड़ते थे वह भी उत्तर नहीं रहे हैं, और हज़ार नए प्रश्न खड़े हो गए हैं, जिनका कोई उत्तर नहीं है। तो उसने लिखा है कि पहले मैं परिभाषा करता था फिलासफी की कि वह शास्त्र जो उत्तर देता है। अब मैं परिभाषा करना चाहता हूं, वह शास्त्र जो प्रश्न देता है।

लोगों की समस्याओं का तुरंत निवारण कर रिपोर्ट अपलोड करे पोर्टल पर : विश्राम कुमार मीणा

डॉ. जरनैल रंगा/गजब हरियाणा

कुरुक्षेत्र। उपायुक्त विश्राम कुमार मीणा ने कहा कि प्रदेश सरकार की तरफ से लोगों की हर विभाग से संबंधित समस्या का समाधान करने के लिए एक ही छत के नीचे समाधान शिविर की व्यवस्था की है। इस समाधान शिविर में आने वाली समस्याओं पर संबंधित विभाग के अधिकारी तुरंत एक्शन ले। इतना ही नहीं इस समस्या का समाधान करने के उपरांत रिपोर्ट को पोर्टल पर अपलोड करना भी सुनिश्चित करे। अहम पहलू यह है कि प्रदेश सरकार की तरफ से हर समस्या को लेकर शुक्रवार के दिन समीक्षा भी की जा रही है। उपायुक्त विश्राम कुमार मीणा सोमवार को लघु सचिवालय के सभागार में समाधान शिविर में लोगों की समस्या का समाधान करने उपरांत बोल रहे थे। इससे पहले उपायुक्त विश्राम कुमार मीणा ने क्रिड व अन्य विभागों से संबंधित समस्याओं को सुना। इनमें से अधिकतर समस्याओं का मौके पर ही समाधान किया और शेष समस्याओं का समाधान करने के लिए संबंधित विभागों के अधिकारियों को कुछ आवश्यक दिशा निर्देश दिए। उन्होंने कहा कि इन शिकायतों की एटीआर के लिए समय निर्धारित किया गया है। उन्होंने संबंधित विभाग के अधिकारियों कहा कि तय समय सीमा में एटीआर रिपोर्ट भेजना सुनिश्चित करें। उन्होंने कहा कि मुख्यमंत्री नायब सिंह के आदेशानुसार प्रशासन की तरफ से प्रत्येक सप्ताह के कार्य दिवस में सोमवार व वीरवार को लोगों की समस्याओं का प्राथमिकता के आधार पर समाधान करने के लिए लघु सचिवालय के सभागार में समाधान शिविर का आयोजन सुबह 10 बजे से लेकर 12 बजे तक किया जा रहा है। उपायुक्त विश्राम कुमार मीणा ने नागरिकों से अपील करते हुए कहा कि नागरिकों की समस्याओं के समाधान के लिए लगाए जा रहे शिविरों का फायदा उठाएं। सभी विभाग अपने विभाग से संबंधित समस्याओं को समयबद्ध तरीके से समाधान करके इस फायदे को निरंतर चलाते रहें।

जिद्द

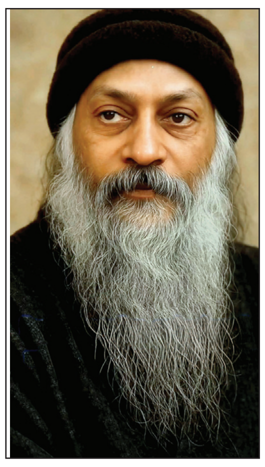

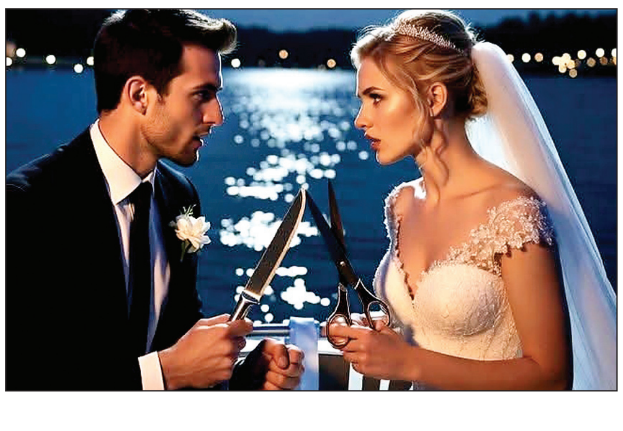

एक बड़ी प्रसिद्ध हंगेरियन कहानी है कि एक आदमी का विवाह हुआ। झगडैल प्रकृति का था, जैसे कि आदमी सामान्यतः होते हैं। मां–बाप ने यह सोचकर कि शायद शादी हो जाए तो यह थोड़ा कम क्रोधी हो जाए, थोड़ा प्रेम में लग जाए, जीवन में उलझ जाए तो इतना उपद्रव न करे, शादी कर दी।

शादी तो हो गई। और आदमी झगडैल होते हैं, उससे ज्यादा झगडैल स्त्रियां होती हैं। झगडैल होना ही स्त्री का पूरा शास्त्र है, जिससे वह जीती है। मां–बाप लड़की के भी यही सोचते थे कि विवाह हो जाए, घर–गृहस्थी बने, बच्चा पैदा हो, सुविधा हो जाएगी। उलझ जाएगी, तो झगड़ा कम हो जाएगा।

लेकिन जहां दो झगडैल व्यक्ति मिल जाएं, वहां झगड़ा कम नहीं होता; दो गुना भी नहीं होता; अनंत गुना हो जाता है। जब दो झगड़ैल व्यक्ति मिलते हैं, तो जोड़ नहीं होता गणित का; दो और दो चार, ऐसा नहीं होता, गुणनफल हो जाता है।

पहली ही रात, सुहागरात, पहला ही–भेंट में जो चीजें आई थीं, उनको खोलने को दोनों उत्सुक थे–पहला डब्बा हाथ में लिया; बड़े ढंग से पैक किया गया था। पति ने कहा कि रुको, यह रस्सी ऐसे न खुलेगी। मैं अभी चाकू ले आता हूं। पत्नी ने कहा कि ठहरो, मेरे घर में भी बहुत भेंटें आती रहीं। हम भी बहुत भेंटें देते रहे हैं। तुमने मुझे कोई नंगे–लुच्चो के घर से आया हुआ समझा है? ऐसे सुंदर फीते चाकुओं से नहीं काटे जाते, कैंची से काटे जाते हैं।

झगड़ा भयंकर हो गया कि फीता चाकू से कटे कि कैंची से कटे। दोनों की इज्जत का सवाल था। बात इतनी बढ़ गई कि डब्बा उस रात तो काटा ही न जा सका, सुहागरात भी नष्ट हो गई उसी झगड़े में। और विवाद, क्योंकि प्रतिष्ठा का सवाल था, दोनों के परिवार दाव पर लगे थे कि कौन सुसंस्कृत है!

वह बात इतनी बढ़ गई कि वर्षों तक झगड़ा चलता रहा। फिर तो बात ऐसी सुनिश्चित हो गई कि जब भी झगडे की हालत आए, तो पति को इतना ही कह देना काफी था, चाकू! और पत्नी उसी वक्त चिल्लाकर कहती, कैंची! वे प्रतीक हो गए।

वर्षों खराब हो गए। आखिर पति के बरदाश्त के बाहर हो गया। और डब्बा अनखुला रखा है। क्योंकि जब तक यही तय न हो कि कैंची या चाकु तब तक वह खोला कैसे जाए। कौन खोलने की हिम्मत करे?

एक दिन बात बहुत बढ़ गई, तो पति समझा–बुझाकर झील के किनारे ले गया पत्नी को। नाव में बैठा, दूर जहां गहरा पानी था, वहा ले गया, और वहा जाकर बोला कि अब तय हो जाए। यह पतवार देखती है, इसको तेरी खोपड़ी में मारकर पानी में गिरा दूंगा। तैरना तू जानती नहीं है, मरेगी। अब क्या बोलती है? चाकू या कैंची? पत्नी ने कहा, कैंची।

जान चली जाए, लेकिन आन थोड़े ही छोड़ी जा सकती है! रघुकुल रीत सदा चली आई, जान जाय पर वचन न जाई।

पति भी उस दिन तय ही कर लिया था कि कुछ निपटारा कर ही लेना है। यह तो जिंदगी बरबाद हो गई। और चाकू–कैंची पर बरबाद हो गई!

लेकिन वह यही देखता है कि पत्नी बरबाद करवा रही है। यह नहीं देखता कि मैं भी चाकू पर ही अटका हुआ हूं अगर वह कैंची पर अटकी है। तो दोनों कुछ बहुत भिन्न नहीं हैं। पर खुद का दोष तो युद्ध के क्षण में, विरोध के क्षण में, क्रोध के क्षण में दिखाई नहीं पड़ता। उसने पतवार जोर से मारी, पत्नी नीचे गिर गई। उसने कहा, अभी भी बोल दे! तो भी उसने डूबते हुए आवाज दी, कैंची। एक डुबकी खाई, मुंह–नाक में पानी चला गया। फिर ऊपर आई। फिर भी पति ने कहा, अभी भी जिंदा है। अभी भी मैं तुझे बचा सकता हूं? बोल! उसने कहा, कैंची। अब पूरी आवाज भी नहीं निकली, क्योंकि मुंह में पानी भर गया। तीसरी डुबकी खाई, ऊपर आई। पति ने कहा, अभी भी कह दे, क्योंकि यह आखिरी मौका है! अब वह बोल भी नहीं सकती थी। डूब गई। लेकिन उसका एक हाथ उठा रहा और दोनों अंगुलियों से कैंची चलती रही। दोनों अंगुलियों से वह कैंची बताती रही–डूबते–डूबते, आखिरी क्षण में।

महाभारत के लिए कोई कुरुक्षेत्र नहीं चाहिए; महाभारत तुम्हारे मन में है। क्षुद्र पर तुम लड़ रहे हो। तुम्हें लड़ने के क्षण में दिखाई भी नहीं पड़ता कि किस क्षुद्रता के लिए तुमने आग्रह खड़ा कर लिया है। और जब तक तुम्हारा अज्ञान गहन है, अंधकार गहन है, अहंकार सघन है, तब तक तुम देख भी न पाओगे कि तुम्हारा पूरा जीवन एक कलह है। जन्म से लेकर मृत्यु तक, तुम जीते नहीं, सिर्फ लड़ते हो। कभी–कभी तुम दिखलाई पड़ते हो कि लड़ नहीं रहे हो, वे लड़ने की तैयारी के क्षण होते हैं; जब तुम तैयारी करते हो।

गुरु घासीदास जयंती विशेष (18 दिसंबर)

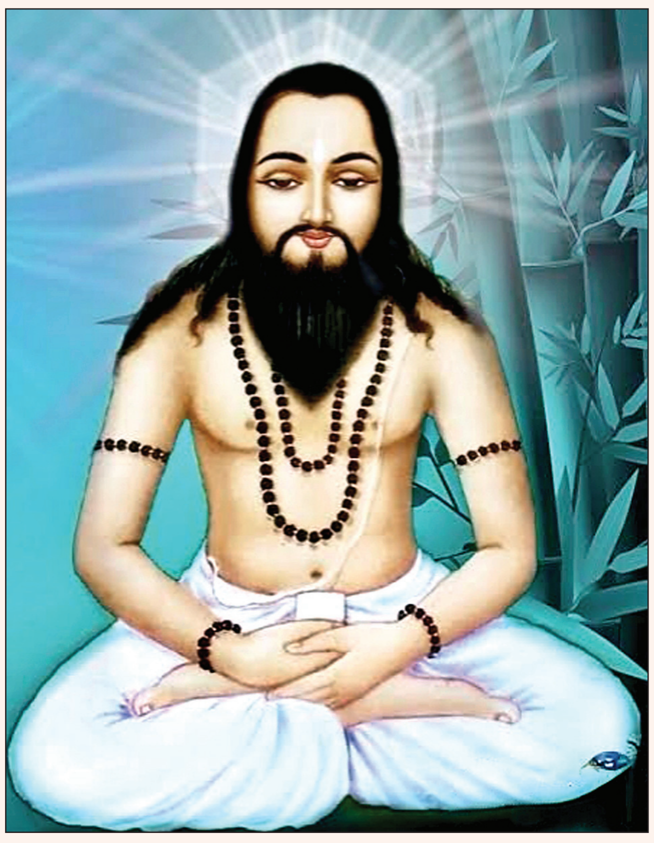

गुरु घासीदास जी मूल निवासी बहुजन समाज के एक स्तंभ तथा युग प्रवर्तक रहे हैं। गुरु घासीदास ने छत्तीसगढ़ में अपने राजनीतिक जीवन में भूमिहीन कृषकों, मजदूर लोगों को जो विषम परिस्थितियों व गहन संकट से जूझ रहे थे, अपने ज्ञान व चेतनामयी स्थिति से उन्हें जाग्रत करने का पुरजोर प्रयास किया। उनका एक साधारण परिवार में जन्म हुआ और उन्होंने असाधारण कार्य कर दिखाया। वे सतनामी पंथ के प्रवर्तक माने जाते हैं। सतनाम का अर्थ है- सत्य की खोज करना। चेतनामय गुणों से युक्त व्यक्ति सतनामी कहलाता है। झूठ नहीं बोलना हिंसा का त्याग, समानता का पालन, प्राणी मात्र पर क्षमा, दया करना और प्रेम करना इन गुणों से युक्त व्यक्ति को 'सतनामी' तथा प्राणी जगत में सुख शांति एवं समृद्धि बनाये रखने वाली विचारधारा ही 'सतनाम' है।

गुरु घासीदास जी ने आजीवन समतामूलक समाज की स्थापना के लिए संघर्ष किया। छत्तीसगढ़ के लोगों के सामाजिक और आर्थिक उन्नति के यदि किसी महापुरुष का योगदान रहा है ,तो वो सामाजिक क्रांति के अग्रदूत, समता के संदेश वाहक एंव छत्तीसगढ़ के उद्धारक सदगुरु गुरु घासीदास जी का है।

गुरु घासीदास का जन्म 18 दिसंबर, 1756 को छत्तीसगढ़ के रायपुर जिले में गिरौद नामक ग्राम में हुआ था। उनके पिता का नाम मंहगू दास तथा माता का नाम अमरौतिन था और उनकी धर्मपत्नी का सफुरा था। गुरु जी को ज्ञान की प्राप्ति छतीसगढ़ के रायगढ़ जिला के सारंगढ़ तहसील में बिलासपुर रोड (वर्तमान में) में स्थित एक पेड़ के नीचे तपस्या करते वक्त प्राप्त हुआ माना जाता है। जहाँ आज गुरु घासीदास पुष्प वाटिका की स्थापना की गयी है। सतगुरु घासीदास जी का जन्म ऐसे समय हुआ जब समाज में छुआछूत, ऊंचनीच, झूठ-कपट का बोलबाला था। ऐसे समय में गुरू घासीदास ने सतनाम पंथ के माध्यम से जाति-आधारित अत्याचार, छुआछूत और वर्ण व्यवस्था पर करारा प्रहार किया, जिससे सिर्फ दलित वर्ग ही नहीं अपितु आदिवासी और पिछड़े तबके का एक बड़ा हिस्सा सतनामी बनने से स्वयं को रोक नही पाया। यह इस क्षेत्र का सबसे बड़ा जाति उन्मूलन आन्दोलन था, जिसने लोगों को सतनामी बनने के लिए प्रेरित किया एंव समाज में समाज को एकता, भाईचारे तथा समरसता का संदेश दिया। घासीदास जी ने समाज के लोगों को सात्विक जीवन जीने की प्रेरणा दी। इसी प्रभाव के चलते लाखों लोग बाबा के अनुयायी हो गए। फिर इसी तरह छत्तीसगढ़ में 'सतनाम पंथ' की स्थापना हुई। इस संप्रदाय के लोग उन्हें अवतारी पुरुष के रूप में मानते हैं। गुरु घासीदास के मुख्य रचनाओं में उनके सात वचन सतनाम पंथ के 'सप्त सिद्धांत' के रूप में प्रतिष्ठित हैं। इसलिए सतनाम पंथ का संस्थापक भी गुरु घासीदास को ही माना जाता है।

सतगुरू घासीदास जी की सात शिक्षाएँ हैं-

(1) सतनाम पर विश्वास रखना।
(2) जीव हत्या नहीं करना।
(3) मांसाहार नहीं करना।
(4) चोरी, जुआ से दूर रहना।
(5) नशा सेवन
(6) जाति-पाति के प्रपंच में नहीं पड़ना।
(7) व्यभिचार नहीं करना।

बाबा जी ने सभी मनुष्यों को एक सामान दर्जा दिलाने के लिए संघर्ष किया तथा मनुष्य जाती को सर्वोपरि प्राथमिकता दी। उन्होंने मनुवादियों द्वारा बनाई जाति व्यवस्था को तोड़ने का आव्हान किया तथा ऊंच-नीच, जाती-पाती के भेद भाव को तोड़कर समाज में समता लाने का प्रयास किया। बाबाजी ने जाती एवं वर्ण व्यवस्था को बहुजन समाज के विरोध में पाया, उस समय भी पाखंड वाद अपने चरम पर था जिसके विरोध में बौद्ध धर्म खड़ा था , जिसे समाप्त करने के लिए बाबा जी ने सतनामी बनो ,संगठन बनाओ ,सघर्ष करो , का नारा दिया संगठन ही वह शक्ति है जिसके द्वारा अपना आत्म सम्मान हासिल किया जा सकता है। बाबाजी नारी जाति का बड़ा आदर करते थे नारी पवित्रता की देवी है नारी ही स्त्री पुरुष की जननी है तथा संसार व मानव निर्माण का कार्य वे ही करते है उन्होंने बाल विवाह ,सती प्रथा का विरोध किया तथा विधवा विवाह संपन्न कराया एवं स्त्री को हर क्षेत्र में समानता का अधिकार दिलाया।

बाबा जी ने बलि प्रथा का विरोध किया अहिंसा पर बल दिया और बताया की सभी प्राणियों में समान आत्मा होती है और उन्हें इस संसार में समान रूप से जीने का अधिकार है। गुरू घासीदास अपने संपूर्ण जीवनकाल में ऊंचनींच, जात-पात व वर्ण व्यवस्था की मनुवादी व्यवस्था पर प्रहार करते रहे तथा लोगों को जागृत करते रहे। बाद में उनके दूसरे बेटे गुरू बालकदास ने पंथ को आगे बढ़ाया। ऐसा माना जाता है कि बालकदास एक बलशाली और बहुत ही साहसी पुरूष थे। उन्होंने होश सम्हालते ही अपने पिता के सतनाम आंदोलन को आगे बढ़ाने के लिए जगह-जगह 'राउटी प्रथा' का आरम्भ कर दिया और सतनाम धर्म को मानने वालों की संख्या दिन प्रतिदिन बढ़ती गई।

उस समय समाज में व्याप्त डोला प्रथा का भी कड़ा प्रतिरोध बालकदास ने किया, जिसमें संपूर्ण शूद्र समाज उनको भारी सहयोग दिया। सवर्ण समाज बालकदास जी को खतरे के रूप में देखने लगे और यहाँ तक कि उन्होंने बालकदास की हत्या का षडयंत्र रच डाला। 28 मार्च 1860 को ग्राम औराबांधा में जब बालकदास अपने अनुयायी के घर भोजन कर रहे थे तभी वहां के दूषित मानसिकता के जातिवादियों ने उन पर हमला बोल दिया। चूंकि वे निहत्थे थे और हमलावरों की संख्या सैकड़ों में थी। इस कारण वे न खुद को और ना ही अपने दो अंगरक्षकों सरहा और जोधाई को बचा सके। इस तरह उन्होंने सतनामी पन्थ के लिए अपने प्राणों की पंथ दे दी। हालांकि आज भी गुरू के वंशजों द्वारा सतनाम आंदोलन चलाया जा रहा हैए लेकिन उसका तेज बालकदास के काल जैसा नहीं है।

इस तरह कहा जा सकता है की बाबा जी ने जिन आदर्शों के लिए संघर्ष किया उसे व्यर्थ नहीं जाने देना चाहिए हमें समझना होगा और देश तथा समाज की रक्षा के लिए तत्पर रहना होगा। साथियों हमें ये बात हमेशा याद रखनी चाहिए कि हमारे पूर्वजों का संघर्ष और बलिदान व्यर्थ नहीं जाना चाहिए। हमें उनके बताए मार्ग का अनुसरण करना चाहिए बहुजन नायक मान्यवर कांशीराम साहबजी ने वह कर दिखाया जो उस दौर में सोच पाना भी मुश्किल था...

सच अक्सर कड़वा लगता है। इसी लिए सच बोलने वाले भी अप्रिय लगते हैं। सच बोलने वालों को इतिहास के पन्नों में दबाने का प्रयास किया जाता है, पर सच बोलने का सबसे बड़ा लाभ यही है कि वह खुद पहचान कराता है और घोर अंधेरे में भी चमकते तारे की तरह दमका देता है। सच बोलने वाले से लोग भले ही घृणा करें, पर उसके तेज के सामने झुकना ही पड़ता है। इतिहास के पन्नों पर जमी धूल के नीचे ऐसे ही एक तेजस्वी क्रान्तिकारी शख्शियत क्रांतिकारी,महान संत शिरोमणि परमपूज्य गुरु घासीदास जी का नाम दबा है। गुरु घासीदास जी के नाम पर बिलासपुर (अब छत्तीसगढ़ राज्य), में गुरु घासीदास केन्द्रीय विश्वविद्यालय की सन 1983 में स्थापना की गई। यह विश्वविद्यालय 655 एकड़ में फैला हुआ है।

सभी देशवासियों को सतनामी पंथ के संस्थापक, सामाजिक न्याय के पुरोधा, सूर्यकोटि, परमपूज्य गुरु घासीदास जी की जंयती की हार्दिक शुभेच्छा एंव मंगलकामनाएं एंव शत-शत नमन!!

हरियाणा सरकार की ओर से जिले को जल्द मिलेगा मेडिकल कॉलेज का तोहफा

935 करोड़ की लागत से गांव सांपन खेड़ी में बन रहा भगवान परशुराम मेडिकल कॉलेज

डॉ. जरनैल रंगा/गजब हरियाणा

कैथल। आमजन को बेहतर स्वास्थ्य सुविधाएं मुहैया करवाने के उद्देश्य से हरियाणा सरकार द्वारा जिले के गांव सांपन खेड़ी में बनाए जा रहे मेडिकल कॉलेज का निर्माण कार्य जून 2026 में पूरा होने की संभावनाएं हैं। भगवान परशुराम राजकीय मेडिकल कॉलेज के भवन का निर्माण कार्य तेजी से चल रहा है। इसका करीब 74 प्रतिशत काम पूरा हो चुका है।

इसके शुरू हो जाने से कैथल सहित आस-पास के जिलों के लोगों को स्वास्थ्य संबंधी सेवाओं में बड़ा लाभ होगा। इस समय जरूरत होने पर जिला अस्पताल से मरीजों को चंडीगढ़, रोहतक पीजीआई या फिर कल्पना चावला मेडिकल कॉलेज में रेफर किया जाता है। कैथल जिले के विकास को एक नई दिशा देते हुए करीब 935 करोड़ रुपये की अनुमानित लागत से यह मेडिकल कॉलेज बन रहा है। निर्माण कार्य में कई-कई मंजिला भवन बनकर तैयार हो चुके हैं। इसके बन जाने से न केवल कैथल जिले के स्वास्थ्य सेवाओं का कायाकल्प होगा, बल्कि छात्रों के लिए 100 एमबीबीएस सीटों पर डॉक्टरों की पढ़ाई का रास्ता भी खुलेगा। यह परियोजना हरियाणा सरकार की प्रदेश में गुणवत्तापूर्ण स्वास्थ्य सुविधाओं और मेडिकल शिक्षा को मजबूत करने की प्रतिबद्धता को दर्शाती है। बता दें कि पूर्व मुख्यमंत्री मनोहर लाल ने इस मेडिकल कॉलेज के निर्माण की घोषणा की थी। जिसे हरियाणा के मुख्यमंत्री नायब सिंह सैनी गहन रूचि लेकर आगे बढ़ा रहे हैं। उनके निर्देशानुसार मेडिकल कॉलेज के निर्माण का कार्य तेजी से चल रहा है। यह मेडिकल कॉलेज कैथल-करनाल रोड पर ग्राम पंचायत सांपन खेड़ी की 20 एकड़ भूमि पर स्थापित किया जा रहा है। इस परियोजना पर सितंबर 2023 में संबंधित एजेंसी द्वारा कार्य शुरू किया गया था।

परियोजना के तहत आधुनिक सुविधाओं से लैस कई इमारते शामिल हैं। मुख्य रूप से 530 बिस्तरों वाला अस्पताल भवन बनेगा, जिसमें बेसमेंट, ग्राउंड फ्लोर तथा सात मंजिले होंगी। इसी प्रकार मेडिकल कॉलेज भवन में 100 एमबीबीएस सीटों के साथ, परीक्षा हाल सहित अन्य सुविधाएं होंगी। इसमें 350 व 250 क्षमता के साथ क्रमशः लड़कों एवं लड़कियों के लिए हॉस्टल बनाया जा रहा है। इसमें डाइनिंग/किचन की सारी सुविधाएं मौजूद रहेंगी। वहीं जूनियर एवं सीनियर रेजिडेंट और क्लास 1 व 2 अधिकारियों के लिए आवास ब्लॉक बनाए जा रहे हैं। इसके अलावा मेडिकल उपकरण, सामान्य फर्नीचर और साइट का विकास, बाहरी सेवाओं और अन्य संबंधित कार्यों को भी शामिल किया गया है।

कैथल डीसी अपराजिता ने कहा कि एक बार पूरी तरह से चालू हो जाने के बाद भगवान परशुराम राजकीय मेडिकल कॉलेज कैथल और आस-पास के क्षेत्रों के लिए स्वास्थ्य संबंधी लाभ मिलेगा। यह न केवल बेहतर स्वास्थ्य सेवाएं प्रदान करेगा, बल्कि युवाओं को 100 एमबीबीएस सीटों के माध्यम से चिकित्सा शिक्षा प्राप्त करने का अवसर भी प्रदान करेगा।

भारतीयों को चाहिए अब सेहतमंद और स्वादिष्ट नाश्ता

लोगों के बीच स्वास्थ्य के प्रति बढ़ी जागरूकता और बदलती जीवनशैली के कारण भारत का स्नैक्स (नाश्ता) बाजार अब पूरी तरह से सेहतमंद होने की ओर बढ़ रहा है। इससे ब्रांडों को नवाचार करने और भारत के खाद्य एवं पेय बाजार में नए ब्रांडों के आने का भी रास्ता खुल रहा है। शुक्रवार को इंडियन हेल्दी स्नैकिंग समिट 2025 में फॉर्मली द्वारा जारी एक अध्ययन रिपोर्ट के मुताबिक, लोग अब नाश्ते में सेहतमंद चीजें ही खाना चाह रहे हैं। करीब 6,000 लोगों पर किए गए सर्वेक्षण से पता चला है कि 72 फीसदी लोग अब ऐसा नाश्ता करना पसंद करते हैं तो उनकी ऊर्जा बढ़ाए, मूड बढ़िया करें और जिसमें भरपूर प्रोटीन हो। हालांकि, स्वाद अब भी सबसे जरूरी है और 94 फीसदी लोगों ने बताया कि वे ऐसा नाश्ता पसंद करते हैं, जो स्वादिष्ट भी हो और ज्यादा से ज्यादा पौष्टिक भी हो। रिपोर्ट में कहा गया है, 'इस बीच 55 फीसदी लोग वैसा स्नैक्स पसंद करते हैं, जो नेचुरल हो और उनमें कोई प्रिजर्वेटिव न रहे। यह दर्शाता है कि स्वच्छ लेबल अब एक मानदंड बन गया है।' इसके अलावा भुने हुए और फ्लेवर्ड मेवे सबसे पसंदीदा नाश्ता है और 36 फीसदी लोगों ने बताया कि उन्हें यही पसंद है। रिपोर्ट में कहा गया है।

सेवा के अधिकार अधिनियम के तहत निर्धारित अवधि में आमजन को दें सेवाएं : उपायुक्त अपराजिता

गजब हरियाणा न्यूज/डॉ जरनैल रंगा

कैथल। डीसी अपराजिता ने बैठक लेकर सेवा अधिकार अधिनियम और राज्य के प्रमुख ऑनलाइन प्लेटफॉर्म सरल पोर्टल पर नागरिकों को उपलब्ध करवाई जा रही विभिन्न सेवाओं की स्थिति की गहन समीक्षा की। उन्होंने अधिकारियों को स्पष्ट निर्देश दिए कि उनके स्तर पर पोर्टल पर कोई भी आवेदन तय समय से देरी तक लंबित न रहे। इसके लिए चाहे उन्हें अपने विभाग मुख्यालय तक जाना पड़े या फिर साथ जुड़े विभाग के अधिकारियों के साथ तालमेल बनाना पड़े। स्वयं पहल करते हुए इन आवेदनों को तय समय में निपटाएं। ताकि सरकार के निर्देशानुसार लोगों को समय पर सेवाएं मिल सकें। डीसी ने कहा कि इन पोर्टल पर आवेदन महज संख्याएं नहीं हैं, ये आमजन की समस्याएं हैं। जिनका समय पर समाधान बहुत जरूरी है। इसमें किसी भी तरह की देरी बर्दाश्त नहीं की जाएगी। डीसी ने सभी विभागाध्यक्षों को कड़े निर्देश दिए कि बैठक में स्वयं उपस्थित हों। साथ ही नागरिकों की लंबित शिकायतों का समय पर और प्राथमिकता के आधार पर समाधान सुनिश्चित किया जाए। उन्होंने स्पष्ट किया कि राइट टू सर्विस एक्ट के तहत सभी सेवाएं जैसे जाति प्रमाण पत्र, शादी का पंजीकरण, आय प्रमाण पत्र, रिहायशी प्रमाण पत्र आदि निर्धारित तय समय अवधि के भीतर नागरिकों को उपलब्ध करवाई जाएं। अधिकारियों को सरल पोर्टल पर आने वाले आवेदनों की दैनिक निगरानी करने और यह सुनिश्चित करने के लिए कहा गया कि कोई भी आवेदन अनावश्यक रूप से लंबित न रहे। डीसी ने विशेष रूप से उन आवेदनों पर ध्यान केंद्रित किया जो किसी कारणवश मुख्यालय स्तर पर लंबित हैं। उन्होंने अधिकारियों से कहा कि मुख्यालय स्तर पर लंबित पड़े ऐप्लिकेशन को लेकर संबंधित विभाग के उच्च अधिकारियों के साथ अच्छा तालमेल बैठाया जाए। जरूरी पत्राचार और फॉलोअप करके जल्द से जल्द उनका समाधान करें ताकि नागरिकों को बेवजह इंतजार न करना पड़े। डीसी ने स्पष्ट किया कि सेवाओं में विलंब का मुख्य कारण मुख्यालय स्तर पर तालमेल की कमी नहीं होनी चाहिए। डीसी अपराजिता ने जोर देकर कहा कि सरल पोर्टल सुशासन की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है, जिसका उद्देश्य पारदर्शिता और जवाबदेही सुनिश्चित करना है। सभी अधिकारियों को यह सुनिश्चित करना चाहिए कि इस प्लेटफार्म का उपयोग नागरिकों को बिना किसी परेशानी के सरकारी सेवाएं प्रदान करने के लिए प्रभावी ढंग से किया जाए। उन्होंने अधिकारियों को सख्त निर्देश दिए कि सेवा प्रदान करने में लापरवाही या जानबूझकर देरी करने वाले अधिकारियों के खिलाफ नियमानुसार कार्रवाई की जाएगी।

अमृतबाणी

शिरोमणि सतगुरु रविदास जिओ की

कह रैदास तेरी भगति दूरि है, भाग बड़े सो पावै
तजि अभिमान मेटि आपा पर, पिपिलक हवै चुनि खावै

जय गुरुदेव जी

व्याख्या : ईश्वर की आराधना भाग्य के माध्यम से प्राप्त होती है। जो व्यक्ति अभिमान से मुक्त होता है, वह जीवन में अवश्य सफल होता है। ठीक उसी प्रकार, जैसे एक बड़ा हाथी शक्कर के दानों को नहीं उठा सकता, वहीं एक छोटी चींटी उन्हें सरलता से इकट्ठा कर लेती है।

धन गुरुदेव जी

भारत में मरीज चाहते हैं स्वास्थ्य को लेकर भरोसेमंद जानकारी

भारत में स्वास्थ्य सेवाओं को लेकर मरीजों की सोच तेजी से बदल रही है। एक नई रिपोर्ट के मुताबिक, करीब 83 फीसदी मरीज ऐसी जानकारी चाहते हैं जो साफ, भरोसेमंद और आसानी से उपलब्ध हो, ताकि वे सही अस्पताल और इलाज चुन सकें। फिक्की और ईवाई-पार्थेनन ने इस पर एक रिपोर्ट की है जिसका नाम है 'टू अकाउंटेबल केयर: मैक्सिमाइजिंग हेल्थकेयर डिलीवरी इम्पैक्ट, एफिशिएंटली'। इसने देश के 40 शहरों में 250 अस्पतालों, 75,000 बेड्स, 1,000 से ज्यादा मरीजों और 100 से अधिक डॉक्टरों के सर्वे के आधार पर कई अहम बातें सामने रखी हैं। रिपोर्ट बताती है कि भारत में पिछले दो दशकों में प्रति व्यक्ति अस्पताल बेड की संख्या दोगुनी हो गई है, लेकिन फिर भी वैश्विक स्तर पर हमारा बेड डेनसिटी सबसे कम है। जहां दुनिया में औसतन एक अस्पताल में 100 से ज्यादा बेड होते हैं, वहीं भारत में यह संख्या 25-30 ही है। इसके अलावा, स्वास्थ्य सेवाओं में पेमेंट और प्रोवाइडर सिस्टम की जटिलता भी एक बड़ी चुनौती है। देश में टॉप पांच पेयर सिर्फ 40 फीसदी भुगतान करते हैं, जबकि विकसित देशों में यह आंकड़ा 80 फीसदी तक है।

मरीजों की प्राथमिकता: गुणवत्ता पर भरोसा

सर्वे में शामिल 90 फीसदी मरीजों ने कहा कि अगर उन्हें प्रमाणित गुणवत्ता वाली सेवाएं मिलें, तो वे इसके लिए ज्यादा पैसे देने को तैयार हैं। मरीजों का कहना है कि एक ऐसा भरोसेमंद सिस्टम होना चाहिए, जो अस्पतालों की रेटिंग और इलाज के नतीजों की सटीक जानकारी दे। इससे उन्हें यह तय करने में आसानी होगी कि कहां इलाज करवाना बेहतर है। रिपोर्ट में एक 'वैल्यू डिजिटल फ्रेमवर्क' का सुझाव दिया गया है, जिसमें पांच अहम बिंदु हैं: मजबूत इंफ्रास्ट्रक्चर, डेटा का बेहतर आदान-प्रदान, स्मार्ट सिस्टम का इस्तेमाल, बेहतर देखभाल और डेटा आधारित गवर्नेंस। ये कदम मरीजों को बेहतर सेवाएं देने और स्वास्थ्य प्रणाली को और जवाबदेह बनाने में मदद कर सकते हैं। ईवाई-पार्थेनन इंडिया के पार्टनर कौवान मूवदावाला का कहना है कि मरीज और डॉक्टर दोनों ही पारदर्शी जानकारी और सही रिजल्ट की जरूरत को समझते हैं। वहीं, फिक्की हेल्थ सर्विसेज कमेटी के को-चेयर वरुण खन्ना ने इसे एक दर्पण और नक्शा बताया, जो बताता है कि भारत का स्वास्थ्य सिस्टम कितना आगे बढ़ा है और इसे अभी किन दिशाओं में काम करना है। उनका कहना है कि अब फोकस मात्रा से हटकर गुणवत्ता, मरीजों के अनुभव और लंबे समय तक बेहतर स्वास्थ्य पर होना चाहिए।

संत महिष

हिमवंत के वन में कभी एक जंगली महिष रहता था। कीचड़ से सना, काला और बदबूदार। किंतु वह एक शीलवान महिष था। उसी वन में एक नटखट बंदर भी रहा करता था। शरारत करने में उसे बहुत आनंद आता था। मगर उससे भी अधिक आनंद उसे दूसरों को चिढ़ाने और परेशान करने में आता था। अतः स्वभावतः वह महिष को भी परेशान करता रहता था। कभी वह सोते में उसके ऊपर कूद पड़ता; कभी उसे घास चरने से रोकता तो कभी उसके सींगों को पकड़ करकूदता हुआ नीचे उतर जाता तो कभी उसके ऊपर यमराज की तरह एक छड़ी लेकर सवारी कर लेता। भारतीय मिथक परम्पराओं में यमराज की सवारी महिष बतलाई जाती है।उसी वन के एक वृक्ष पर एक यक्ष रहता था। उसे बंदन की छेड़खानी बिल्कुल पसन्द न थी। उसने कई बार बंदर को दंडित करने के लिए महिष को प्रेरित किया क्योंकि वह बलवान और बलिष्ठ भी था। किंतु महिष ऐसा मानता था कि किसी भी प्राणी को चोट पहुंचाना शीलत्व नहीं है; और दूसरों को चोट पहुँचाना सच्चे सुख का अवरोधक भी है। वह यह भी मानता था कि कोई भी प्राणी अपने कर्मों से मुक्त नहीं हो सकता। कर्मों का फल तो सदा मिलता ही है। अतः बंदर भी अपने बुरे कर्मों का फल एक दिन अवश्य पाएगा। और एक दिन ऐसा ही हुआ जबकि वह महिष घास चरता हुआ दूर किसी दूसरे वन में चला गया। संयोगवश उसी दिन एक दूसरा महिष पहले महिष के स्थान पर आकर चरने लगा। तभी उछलता कूदता बंदर भी उधर आ पहुँचा। बंदर ने आव देखी न ताव। पूर्ववत् वह दूसरे महिष के ऊपर चढ़ने की वैसी ही धृष्टता कर बैठा। किंतु दूसरे महिष ने बंदर की शरारत को सहन नहीं किया और उसी तत्काल जमीन पर पटक कर उसकी छाती में सींग घुसेड़ दिये और पैरों से उसे रौंद डाला । क्षण मात्र में ही बंदर के प्राण पखेरु उड़ गये।

सर्दियों में स्वास्थ्य संबंधी सुझाव: ठंड के मौसम में सेहत कैसे बनाए रखें

सर्दी अपने साथ धुंध भरी सुबह, सुहावनी शाम और मौसमी त्योहारों की गर्माहट लेकर आती है। हालाँकि, यह सर्दी, रूखी त्वचा और सांस संबंधी समस्याओं जैसी अनोखी स्वास्थ्य चुनौतियाँ भी लेकर आती है। कुछ सावधानियों को अपनाकर आप स्वस्थ रह सकते हैं और मौसम का पूरा आनंद उठा सकते हैं। आइए इस सर्दी में आपको स्वस्थ रखने के लिए कुछ सुझाव देखें।

1. मौसमी खाद्य पदार्थों से अपनी रोग प्रतिरोधक क्षमता बढ़ाएँ

सर्दियों में अक्सर सर्दी-जुकाम और फ्लू की समस्या बढ़ जाती है। पारंपरिक सुपरफूड्स से अपनी प्रतिरक्षा प्रणाली को मजबूत करें।

विटामिन सी के लिए आंवला : आंवला सर्दियों का पावरहाउस है, जो विटामिन सी और एंटीऑक्सीडेंट से भरपूर है। इसे कच्चा, चटनी के रूप में या मुरब्बा में डालकर खाएं।

हल्दी वाला दूध : इसे 'हल्दी दूध' के नाम से जाना जाता है, यह एंटी-इंफ्लेमेटरी गुणों वाला एक प्राकृतिक इम्युनिटी बूस्टर है। सोने से पहले इसे गर्म करके पिएं।

जिंक युक्त खाद्य पदार्थ : बेहतर प्रतिरक्षा कार्य के लिए अपने आहार में दालें, मेवे और तिल जैसे बीज शामिल करें।

प्रोबायोटिक गुण : स्वस्थ आंत के लिए दही, छाछ, या इडली और डोसा जैसे किण्वित खाद्य पदार्थों को अपने आहार में शामिल करें।

यह क्यों महत्वपूर्ण है : पोषक तत्वों से भरपूर मौसमी खाद्य पदार्थ खाने से सर्दियों में होने वाली आम बीमारियाँ दूर रहती हैं।

2. ठंड होने पर भी हाइड्रेटेड रहें

ठंड के मौसम में आप पानी पीना भूल सकते हैं, लेकिन आपके शरीर के कार्यों के लिए जलयोजन अत्यंत महत्वपूर्ण है।

गर्म पानी पियें : अदरक, तुलसी या अजवाइन के साथ गर्म पानी पीने से आप हाइड्रेटेड रहते हैं और पाचन में सुधार होता है।

सूप और काढ़ा : घर पर बने सूप और हर्बल पेय जैसे काढ़ा सर्दियों के दौरान आरामदायक और पौष्टिक होते हैं।

यह क्यों महत्वपूर्ण है : उचित जलयोजन स्वस्थ त्वचा, कुशल चयापचय और मजबूत प्रतिरक्षा प्रणाली को बनाए रखने में मदद करता है।

3. सर्दियों में त्वचा को शुष्क होने से बचाएं

सर्दियों में त्वचा का रूखापन एक आम समस्या है, खासकर भारत के उत्तरी भागों में। सरल उपाय त्वचा की जलन को रोक सकते हैं और इसे स्वस्थ रख सकते हैं।

नारियल तेल का प्रयोग करें : प्राकृतिक रूप से नमी बरकरार रखने के लिए नहाने से पहले गर्म नारियल तेल लगाएं।

ज़्बैरियर क्रीम का प्रयोग करें : एलोवेरा या ग्लिसरीन जैसे प्राकृतिक तत्वों से युक्त गाढ़ी क्रीम का प्रयोग करें।

-ओमेगा-3 युक्त खाद्य पदार्थ खाएं : अलसी के बीज, अखरोट और सरसों का तेल त्वचा की मरम्मत के लिए अच्छे हैं।

यह क्यों महत्वपूर्ण है: स्वस्थ त्वचा न केवल अच्छी दिखती है, बल्कि कीटाणुओं के खिलाफ सुरक्षा कवच के रूप में भी काम करती है।

4. विटामिन डी के लिए सर्दियों की धूप का आनंद लें

ठंडे महीनों में अक्सर सूर्य की रोशनी कम मिलती है, जिससे विटामिन डी की कमी हो सकती है।

सुबह की धूप: प्राकृतिक विटामिन डी संश्लेषण के लिए सुबह की धूप में 15-20 मिनट बिताएं।

विटामिन डी युक्त खाद्य पदार्थ : अपने भोजन में मशरूम, फोर्टिफाइड दूध और रोहू जैसी मछली शामिल करें।

पूरक : यदि आवश्यक हो तो विटामिन डी के पूरक के लिए अपने डॉक्टर से परामर्श लें।

यह क्यों महत्वपूर्ण है : पर्याप्त विटामिन डी हड्डियों के स्वास्थ्य, प्रतिरक्षा और समग्र जीवन शक्ति का समर्थन करता है।

5.अपने फेफड़ों का ख्याल रखें

सर्दियों में कई भारतीय शहरों में धुंध की वजह से सांस संबंधी समस्याएं और भी बढ़ सकती हैं। इन उपायों से अपने फेफड़ों की सुरक्षा करें:

भाप लेना : नाक के मार्ग को साफ करने के लिए भाप में नीलगिरी या कपूर मिलाएं।

श्वास व्यायाम : प्राणायाम (योगिक श्वास) जैसे अभ्यास फेफड़ों की क्षमता में सुधार कर सकते हैं और जलन को कम कर सकते हैं।

एयर प्यूरीफायर का उपयोग करें : बेहतर वायु गुणवत्ता के लिए एयर प्यूरीफायर में निवेश करें या एरेका पाम जैसे इनडोर पौधे रखें।

यह क्यों महत्वपूर्ण है : स्वस्थ फेफड़े सुनिश्चित करते हैं कि आप पूरे शीतकाल में सक्रिय और ऊर्जावान बने रहें।

7. सर्दियों में वजन बढ़ने पर नियंत्रण रखें

र्दियों के मौसम में अक्सर गरिष्ठ, कैलोरी-घने खाद्य पदार्थों की लालसा होती है। संतुलित मात्रा में त्योहारी व्यंजनों का आनंद लें।

स्वस्थ नाश्ता : तले हुए नाश्ते की जगह भुनी हुई मूंगफली, तिल के साथ गुड़ (तिल के लड्डू) या मखाना खाएं।

छोटे-छोटे भोजन करें : गाजर, पालक और मूली जैसी मौसमी सब्जियों के साथ बार-बार छोटे-छोटे भोजन करने से आपकी ऊर्जा स्थिर रहती है।

यह क्यों महत्वपूर्ण है : स्वस्थ वजन बनाए रखने से आपके हृदय और जोड़ों पर अनावश्यक दबाव नहीं पड़ता।

8. सूर्य के प्रकाश और गतिविधि से अपना मूड बेहतर करें

छोटे दिन कभी-कभी मूड में गिरावट का कारण बन सकते हैं, जिसे मौसमी भावात्मक विकार (एसएडी) के रूप में जाना जाता है।

बाहर समय बिताएं : पार्क में सुबह की सैर भी आपका मन प्रसन्न कर सकती है।

सक्रिय रहें : अपनी ऊर्जा को उच्च बनाए रखने के लिए योग या इनडोर वर्कआउट का प्रयास करें।

सामाजिक संबंध : खुशियाँ बढ़ाने और तनाव कम करने के लिए प्रियजनों के साथ त्यौहार मनाएँ।

यह क्यों महत्वपूर्ण है : मानसिक रूप से सक्रिय और सामाजिक रूप से जुड़े रहने से सर्दियों की उदासी को दूर करने में मदद मिलती है और समग्र स्वास्थ्य में सुधार होता है।

9. वरिष्ठ नागरिकों के लिए विशेष देखभाल

बुजुर्ग व्यक्तियों को सर्दी से संबंधित स्वास्थ्य समस्याओं का अधिक खतरा होता है। अतिरिक्त सावधानी बरतने से काफी मदद मिल सकती है।

बुद्धिमानी से कपड़े पहनें : शरीर की गर्मी बनाए रखने के लिए हल्के थर्मल और गर्म शॉल का उपयोग करें।

हल्के व्यायाम: जोड़ों की गतिशीलता में सुधार के लिए सुबह की स्ट्रेचिंग या हल्के योग जैसी गतिविधियों को प्रोत्साहित करें।

स्वास्थ्य निगरानी : नियमित जांच से गठिया रोग जैसी सर्दियों से संबंधित विशेष चिंताओं का समाधान किया जा सकता है।

यह क्यों महत्वपूर्ण है : निवारक देखभाल वरिष्ठ नागरिकों को सुरक्षित और आरामदायक सर्दियों का आनंद लेने में मदद करती है।

10.अपने घर को सर्दियों के अनुकूल बनाएं

ठंड के महीनों में आपके स्वास्थ्य को बनाए रखने में आपका रहने का स्थान महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

नियमित रूप से हवादार रखें : वायु संचार को बेहतर बनाने के लिए दोपहर के समय थोड़ी देर के लिए खिड़कियां खोलें।

फर्श को गर्म रखें : ठंडे फर्श के संपर्क को कम करने के लिए गलीचे या कालीन का उपयोग करें।

स्वच्छ रहें : कीटाणुओं को फैलने से रोकने के लिए नियमित रूप से सतहों को साफ करें और हाथ धोएं।

यह क्यों महत्वपूर्ण है : एक गर्म और स्वच्छ घरेलू वातावरण श्वसन संबंधी समस्याओं के जोखिम को कम करता है और समग्र आराम को बढ़ावा देता है।

निष्कर्ष

सर्दी का मौसम अपने त्योहारों, स्वादिष्ट खाद्य पदार्थों और ठंडे मौसम के साथ आनंद लेने का समय है। इन व्यावहारिक सुझावों का पालन करके, आप अपने स्वास्थ्य की रक्षा कर सकते हैं और मौसम का पूरा आनंद ले सकते हैं। गर्म रहें, अच्छा खाएं और स्वस्थ शरीर और दिमाग के साथ सर्दियों के जादू का आनंद लें!

1 दिसंबर के अंक का शेष...

मन को कैसे पढ़ें.... साधु की परीक्षा

किसी के मन को कैसे पढ़ें?

साधु की परीक्षा

बुद्ध ने साधु की ओर देखा और कहा:

'साधु, अब मैं तुम्हारी परीक्षा लूंगा।

यहां बैठा यह बालक (उन्होंने एक छोटे भिक्षु की ओर इशारा किया) अभी कुछ सोच रहा है। तुम उसकी आंखों में देखो और बताओ कि वह क्या महसूस कर रहा है। ' साधु ने ध्यान लगाया। उसने बालक की आंखों में झांका, लेकिन कुछ स्पष्ट नहीं दिखा।

पहले उसे लगा कि शायद बालक प्रसन्न है। फिर लगा कि वह दुखी है। मन बार-बार उलझता रहा।

साधु ने सिर झुका लिया और कहा:- 'भगवान! मैं असफल रहा। मैं नहीं जान पाया कि बालक क्या सोच रहा है। '

बुद्ध ने मुस्कुराकर कहा:-

'यह तुम्हारी असफलता नहीं, तुम्हारे मन का दर्पण है। तुम्हारे भीतर अभी भी चाहत है—सफल होने की, सिद्ध होने की। यही चाहत तुम्हें भ्रमित कर रही है। जब मन शांत होगा, तब तुम बिना प्रयास किए ही दूसरों के भाव समझ पाओगे। '

घटना - करुणा की झलक

तभी वह छोटा भिक्षु मुस्कुराया **और बोला:-** 'भगवान! जब साधु मुझे देख रहे थे, तब मैं सोच रहा था कि काश, ये साधु दुख से मुक्त हो जाएँ। मुझे इनके लिए करुणा महसूस हो रही थी।' साधु यह सुनकर काँप गया।

उसने सोचा- 'मैं तो इसका मन पढ़ना चाहता था, लेकिन यह तो मेरे लिए शुभकामनाएँ सोच रहा था! असली मन-पढ़ना तो करुणा से आता है। '

बुद्ध का अंतिम उपदेश

बुद्ध ने कहा:-

'साधु और शिष्यों! याद रखो, मन की बातें पढ़ना कोई अलौकिक शक्ति नहीं है। पहला चरण है-धैर्य: बिना प्रतिक्रिया दिए सुनना।

दूसरा चरण है -करुणा:- शब्दों के पीछे छिपे भाव को समझना।

तीसरा और अंतिम चरण है- **स्वयं का मन जानना:** जब तुम अपने मन की चालाकियों, इच्छाओं और भय को समझ लोगे, तभी तुम सच में दूसरों को समझ पाओगे।

अगर तुम अपना मन जीत लोगे, तो यह दुनिया तुम्हारे सामने खुली किताब की तरह हो जाएगी। और तब तुम्हें किसी के मन को पढ़ने की ज़रूरत ही नहीं होगी—क्योंकि तुम हर जगह केवल करुणा, प्रेम और सत्य ही देखोगे। '

साधु का रूपांतरण

साधु बुद्ध के चरणों में गिर पड़ा। उसकी आंखों से आँसू बह रहे थे।

उसने कहा:-

'भगवान! आज मैंने समझ लिया कि मन पढ़ने की असली शक्ति बाहर नहीं, बल्कि भीतर है। मैं आज से अपने मन को जानने की साधना करूँगा। अब मुझे कोई जादू नहीं चाहिए। अब मैं केवल सत्य, धैर्य और करुणा चाहता हूँ।

'बुद्ध ने आशीर्वाद दिया और कहा: 'यही है असली ज्ञान। यही है मन की बातें पढ़ने का रहस्य। '

कहानी का सार

असली मन-पढ़ने की कला अपने मन को समझने से शुरू होती है। जब मन शांत होता है, तभी हम दूसरों के भाव सही तरह से देख पाते हैं। धैर्य+करुणा+आत्म-ज्ञान= मन की

प्रधानमंत्री फसल बीमा योजना के तहत 31 दिसंबर तक करवाएं अपनी फसल का बीमा : डीडीए डॉ. सुरेंद्र

प्रधानमंत्री फसल बीमा योजना

डॉ. जरनैल रंगा/गजब हरियाणा

कैथल। कृषि एवं किसान कल्याण विभाग के उपनिदेशक डॉ. सुरेंद्र कुमार यादव ने बताया कि प्राकृतिक आपदाओं से किसानों को सुरक्षित करने के लिए प्रधानमंत्री फसल बीमा योजना एक महत्वपूर्ण योजना है। जिसमें किसानों की फसलों के नुकसान की भरपाई की जाती है। सुरक्षित फसल-सुरक्षित खलिहान फसल बीमा है किसानों के लिए वरदान। किसानों को अपनी फसल की सुरक्षा हेतु प्रधानमंत्री फसल बीमा योजना के तहत पंजीकरण जरूर करवाना चाहिए। मौजूदा रबी 2025-26 सीजन में गेहूं, चना, सरसों, जौ व सूरजमुखी फसल का पंजीकरण करवाने की अंतिम तिथि 31 दिसंबर है। उपनिदेशक डॉ. सुरेंद्र कुमार यादव ने बताया कि किसान द्वारा देय प्रीमियम गेहूं, चना, जौ, सरसों व सूरजमुखी के लिए बीमित राशि का 1.5 प्रतिशत है तथा शेष प्रीमियम का भुगतान राज्य व केंद्र सरकार द्वारा किया जाएगा। उन्होंने बताया कि रबी 2025-26 की फसलों की प्रीमियम राशि गेहूं फसल के लिए बीमित राशि 32523.80 रुपये तथा किसान द्वारा देय प्रीमियम राशि 487.86 रुपये प्रति एकड़ है। चने के लिए बीमित राशि 15986.31 रुपये तथा किसान द्वारा देय प्रीमियम राशि 239.79 रुपये प्रति एकड़ है। जौ के लिए बीमित राशि 20727.21 रुपये तथा किसान द्वारा देय प्रीमियम राशि 310.91 रुपये प्रति एकड़ है। सरसों के लिए बीमित राशि 21829.57 रुपये तथा किसान द्वारा देय प्रीमियम राशि 327.44 रुपये प्रति एकड़ है। सूरजमुखी के लिए बीमित राशि 22050.13 रुपये तथा किसान द्वारा देय प्रीमियम राशि 330.75 रुपये प्रति एकड़ है। उन्होंने बताया कि बेमौसमी बारिश, ओलावृष्टि व जलभराव से खड़ी फसल में नुकसान होने पर क्लेम खेत स्तर पर देय होगा। गांव में किसी भी फसल की औसत पैदावार पूर्व निर्धारित पैदावार से कम होने पर क्लेम गांव के सभी बीमित किसानों को दिया जाएगा। फसल कटाई के 14 दिनों के अंदर फसल में नुकसान होने पर भी क्लेम खेत स्तर पर देय होगा (जो फसल सूखने के लिए खेत में रखी हो)। सभी किसानों से आह्वान किया जाता है कि वे अपनी फसलों का बीमा करवाएं। अधिक जानकारी के लिए केंद्र सरकार द्वारा जारी कृषि रक्षक पोर्टल व हेल्पलाइन नंबर 14447 तथा अपनी बैंक शाखा या बीमा कंपनी से संपर्क कर सकते है। फसल बीमा योजना का पूरा विवरण कृषि तथा किसान कल्याण विभाग की वेबसाइट www.agriharyana.gov.in पर उपलब्ध है। इसके अलावा अन्य जानकारी प्राप्त करने के लिए कृषि एवं किसान कल्याण विभाग में संपर्क कर सकते है।

प्रेरणादायक कहानी ....

कुएं से समुद्र तक: लिली और नचिकेता की कहानी

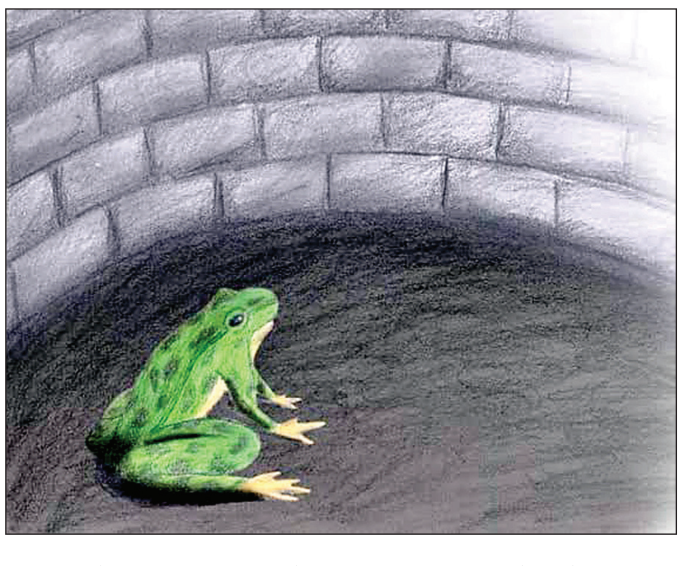

नौ साल की नन्ही लिली अपनी ही दुनिया में मग्न रहने वाली एक प्यारी बच्ची थी। उसके लिए उसका घर, उसका कमरा और पिछवाड़े का छोटा सा बगीचा ही सब कुछ था। स्कूल के अलावा वह कहीं जाना पसंद नहीं करती थी। नए लोगों से मिलना या अनजान जगहों पर जाना उसे असहज कर देता था। यही कारण था कि उसके दोस्त भी न के बराबर थे।

एक दिन कक्षा में शिक्षिका ने उत्साह के साथ घोषणा की, बच्चों! कल हम सब एक रोमांचक यात्रा पर 'जंगल सफारी' के लिए जाएंगे। वहां हम प्रकृति को करीब से देखेंगे। सब अपने माता-पिता से अनुमति ले लेना।

पूरी कक्षा खुशी से झूम उठी, लेकिन लिली का चेहरा मुरझा गया। बदलाव और नई जगह का डर उसे सताने लगा। उसने मन ही मन सोचा, पेड़-पौधे तो स्कूल के पास भी हैं, फिर जंगल जाने की क्या ज़रूरत? लेकिन मैम को मना कैसे करूँ? अब तो मेरा जादुई दोस्त नचिकेता ही कुछ कर सकता है।

वह यह सोच ही रही थी कि अचानक उसकी डेस्क पर एक हरे रंग का मेंढक फुदक कर आ बैठा। लिली डरकर पीछे हटी ही थी कि मेंढक के चारों ओर एक चमकीली रोशनी हुई और ठहाका लगाता हुआ नचिकेता प्रकट हो गया।

नचिकेता! तुमने तो मुझे डरा ही दिया, लिली ने राहत की सांस लेते हुए कहा।

नचिकेता ने मुस्कुराते हुए लिली की आंखों में देखा और बोला, लिली, आज मैं तुम्हें एक ऐसे मेंढक की कहानी सुनाता हूँ, जो बिलकुल तुम्हारी तरह सोचता था।

कहानी: कुएं का मेंढक

एक समय की बात है, एक पुराने और गहरे कुएं में 'भोला' नाम का एक मेंढक रहता था। उसका जन्म वहीं हुआ था और उसने कभी कुएं के बाहर की दुनिया नहीं देखी थी। उसके लिए वह छोटा सा गोल कुआं ही पूरा ब्रह्मांड था।

एक दिन, अचानक समुद्र में रहने वाला एक मेंढक, जिसका नाम 'कोला' था, भटकते हुए उस कुएं में आ गिरा।

भोला ने उसे हैरानी से देखा और पूछा, तुम कहां से आए हो?

कोला ने जवाब दिया, मैं समुद्र से आया हूँ।

भोला ने गर्व से अपने छोटे से कुएं में छलांग लगाई और पूछा, क्या तुम्हारा समुद्र मेरे इस कुएं जितना बड़ा है?

कोला हंस पड़ा, मित्र! तुम मजाक कर रहे हो? समुद्र तो इतना विशाल है कि उसका कोई ओर-छोर नहीं। उसके सामने तुम्हारा कुआं एक बूंद के बराबर भी नहीं।

भोला को गुस्सा आ गया, झूठ! मेरे कुएं से बड़ा कुछ नहीं हो सकता। तुम गप्पे हांक रहे हो।

कोला समझ गया कि बहस करने का कोई फायदा नहीं। उसने कहा, चलो, मैं तुम्हें अपनी दुनिया दिखाता हूँ। कोला ने भोला की मदद की और बड़ी मुश्किल से उसे कुएं के अंधेरे से बाहर निकालकर खुली दुनिया में ले आया।

कुएं से बाहर निकलते ही भोला की आँखें फटी की फटी रह गई।

चमकदार सूरज, लहलहाते पेड़, ठंडी हवा और दूर-दूर तक फैला नीला आकाश! जब कोला उसे समुद्र किनारे ले गया, तो भोला सन्न रह गया। सामने ठाठें मारता विशाल नीला समुद्र था, जिसका दूसरा किनारा दिखाई भी नहीं दे रहा था।

भोला की आँखों में आंसू आ गए। वह बोला, 'मैं कितना मूर्ख था। मैं एक छोटी सी जगह को ही पूरी दुनिया समझ बैठा था। अगर तुम मुझे बाहर न लाते, तो मैं कभी जान ही नहीं पाता कि दुनिया इतनी सुंदर और विशाल है। '

भोला ने तय किया कि अब वह वापस अंधेरे कुएं में नहीं जाएगा, बल्कि इस विशाल दुनिया को देखेगा और सीखेगा।

सीख

कहानी खत्म करके नचिकेता ने लिली की ओर देखा। 'लिली, हमारा 'कम्फर्ट जोन' (आराम का दायरा) उस कुएं जैसा होता है। हमें लगता है कि हम वहां सुरक्षित हैं, लेकिन असल में हम बाहर की खूबसूरत दुनिया और रोमांच से अनजान रह जाते हैं। '

लिली को बात समझ आ गई थी। उसने मुस्कुराते हुए अपना बैग उठाया। 'तुम ठीक कहते हो नचिकेता। मैं भी भोला की तरह कुएं में नहीं रहना चाहती। मैं जंगल जाऊँगी और देखूँगी कि दुनिया कितनी बड़ी है! '

अगले दिन, बस में सबसे आगे वाली सीट पर लिली बैठी थी, उसकी आँखों में डर नहीं, बल्कि नई दुनिया को जानने की चमक थी।

कहानी की शिक्षा:

सैंड आफ आर्ट के माध्यम से युवा पीढ़ी के समक्ष रखा चार साहिबजादों की शहादत के हर लम्हें को

40 मिनट के सैंड आफ आर्ट शो में मुगलों के जुल्म और 4 साहिबजादों की बहादुरी को दिखाया अनोखे तरीके से, प्रदेश सरकार की तरफ से वीर बाल दिवस के उपलक्ष में कुरुक्षेत्र में आयोजित किया सैंड आफ आर्ट शो, जिला शिक्षा अधिकारी विनोद कौशिक ने किया कार्यक्रम का शुभारंभ, स्कूल के प्रांगण में दर्जनों बच्चों ने लिया निबंध लेखन प्रतियोगिता में भाग

डॉ. जरनैल रंगा/गजब हरियाणा

कुरुक्षेत्र। सिख गुरुओं की पावन धरा कुरुक्षेत्र की सरजमीन पर सैंड आफ आर्ट के माध्यम से श्री गुरु गोबिंद सिंह जी के 4 साहिबजादों अजीत सिंह, जुझार सिंह, जोरावर सिंह, व फतेह सिंह के शहादत के हर लम्हें को अनोखे अंदाज में दिखाया गया। इस 40 मिनट के सेंड ऑफ आर्ट शो में मुगलों के जुल्म और 4 साहिबजादों की वीरगाथा को युवा पीढ़ी के समक्ष रखा गया। इस सैंड आफ आर्ट शो का आयोजन वीर बाल दिवस के उपलक्ष में हरियाणा के कला एवं सांस्कृतिक कार्य विभाग की तरफ से आयोजित किया गया।

हरियाणा कला एवं सांस्कृतिक कार्य विभाग की तरफ से प्रदेश सरकार के आदेशानुसार राजकीय संस्कृति मॉडल स्कूल के सभागार में वीर बाल दिवस के उपलक्ष में आयोजित सैंड आफ आर्ट शो का शुभारंभ जिला शिक्षा अधिकारी विनोद कौशिक ने किया। इस सैंड ऑफ आर्ट शो में एनएसबी के कलाकार ओम प्रकाश ने 10वीं पातशाही श्री गुरु गोबिंद सिंह जी के 4 साहिबजादों के जन्म, खालसा पंथ की स्थापना के बाद मुगल शासकों, सरहिंद के सूबेदार वजीर खां द्वारा आक्रमण के बाद 20-21 दिसंबर 1704 को मुगल सेना से युद्ध करने के लिए गुरु गोबिंद सिंह जी ने परिवार सहित श्री आनंदपुर साहिब किले को छोड़ना, सरसा नदी पर जब गुरु गोबिंद सिंह जी के परिवार का बिछड़ने को दिखाया गया।

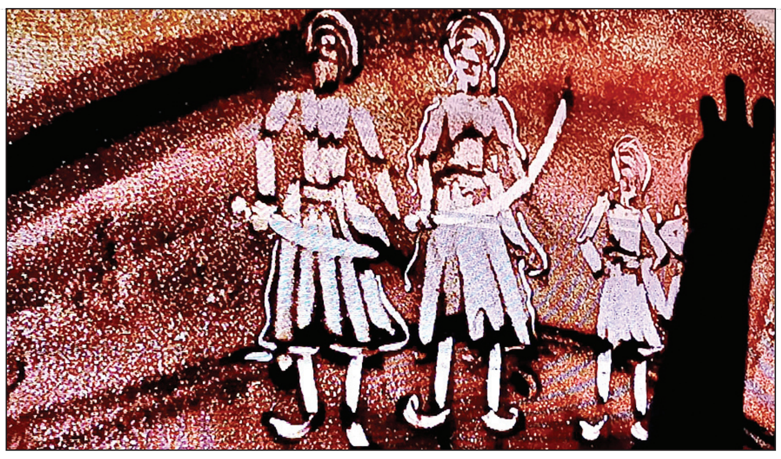

कलाकार ओमप्रकाश ने गंगू ने लालच में आकर तुरंत वजीर खां को गोबिंद सिंह की माता और छोटे साहिबजादों के उसके यहां होने की खबर दे दी जिसके बदले में वजीर खां ने उसे सोने की मोहरें भेंट की, खबर मिलते ही वजीर खां के सैनिक माता गुजरी और 7 वर्ष की आयु के साहिबजादा जोरावर सिंह और 5 वर्ष की आयु के साहिबजादा फतेह सिंह को गिरफ्तार करने गंगू के घर पहुंच गए। उन्हें लाकर ठंडे बुर्ज में रखा गया और उस ठिठुरती ठंड से बचने के लिए कपड़े का एक टुकड़ा तक ना देना, रात भर ठंड में ठिठुरने के बाद सुबह होते ही दोनों साहिबजादों को वजीर खां के सामने पेश किया गया, जहां भरी सभा में उन्हें इस्लाम धर्म कबूल करने को कहा गया, सभा में पहुंचते ही बिना किसी हिचकिचाहट के दोनों साहिबजादों ने ज़ोर से जयकारा लगा जो बोले सो निहाल, सत श्री अकाल,यह देख सब दंग रह गए, वजीर खां की मौजूदगी में कोई ऐसा करने की हिम्मत भी नहीं कर सकता लेकिन गुरु जी की नन्हीं जिंदगियां ऐसा करते समय एक पल के लिए भी ना डरीं के इतिहास को अपनी कला के माध्यम से युवा पीढ़ी के समक्ष रखा।

सैंड आफ आर्ट के इस शो में वजीर खां ने दोनों साहिबजादों को काफी डराया, धमकाया और प्यार से भी इस्लाम कबूल करने के लिए राज़ी करना चाहा, लेकिन दोनों अपने निर्णय पर अटल थे, आखिर में दोनों साहिबजादों को जिंदा दीवारों में चुनवाने का ऐलान किया गया, दोनों साहिबजादों को जब दीवार में चुनना आरंभ किया गया तब उन्होंने 'जपुजी साहिब' का पाठ करना शुरू कर दिया, 27 दिसम्बर सन् 1704 को दोनों छोटे साहिबजादे और जोरावर सिंह व फतेह सिंहजी को दीवारों में चुनवा दिया गया। उधर दूसरी ओर साहिबदाजों की शहीदी की खबर सुनकर माता गुजरी जी ने अकाल पुरख को इस शहादत के लिए शुक्रिया किया और अपने प्राण त्याग दिए। इतना ही नहीं चमकौर साहिब के युद्ध में श्री गुरु गोबिंद सिंह जी साहिबजादे अजीत सिंह व जुझार सिंह ने अतुलनीय वीरता का प्रदर्शन करते हुए वीरगति को प्राप्त हुए की शहादत को सेंड ऑफ आर्ट में दिखाया गया। इस सैंड आफ आर्ट शो की सभी ने प्रशंसा की है। स्कूल के प्रांगण में दर्जनों बच्चों ने वीर बाल दिवस के उपलक्ष में आयोजित निबंध लेखन प्रतियोगिता में भाग लिया। इस मौके पर जिला सूचना एवं जनसम्पर्क अधिकारी डा. नरेन्द्र सिंह, बीईओ रमेश कुमार,एआईपीआरओ बलराम शर्मा, प्रिंसीपल सुनील कुमार, प्रिंसिपल सुखदेव, हेड मास्टर संजय खरबंदा, हैड मास्टर प्यारे लाल, सचिन, निर्मल, सतबीर आदि उपस्थित थे।

मुख्यमंत्री नायब सिंह सैनी ने साखी वाचन के लिए हिमांशी को किया सम्मानित

डॉ. जरनैल रंगा/गजब हरियाणा

कुरुक्षेत्र। प्रदेश सरकार की तरफ से वीर बाल दिवस के उपलक्ष में साखी वाचन के लिए प्रदेश की 3 छात्राओं को मुख्यमंत्री आवास पर आमंत्रित किया गया। यहां पर मुख्यमंत्री नायब सिंह सैनी ने राजकीय गर्ल्स सीनियर सैंकडरी स्कूल पिहोवा की छात्रा हिमांशी को सम्मानित किया।

जिला शिक्षा अधिकारी विनोद कौशिक ने कहा कि वीर बाल दिवस को लेकर प्रदेश सरकार के आदेशानुसार साखी वाचन और निबंध लेखन प्रतियोगिताओं का आयोजन शिक्षा विभाग की तरफ से किया जा रहा है। इस जिले में राजकीय स्कूल पिहोवा की हिमांशी को 12 दिसंबर 2025 को सीएम आवास चंडीगढ पर आमंत्रित किया गया। इस छात्रा के साथ-साथ अंबाला और पंचकुला से भी छात्राओं को बुलाया गया। इनमें से 3 छात्राओं का चयन फाइनल के लिए हुआ।

उन्होंने कहा कि साखी वाचन में राजकीय स्कूल की छात्रा शिवानी ने मुख्यमंत्री के समक्ष साक्षी का वाचन किया। सभी ने साखी वाचन की प्रशंसा की है। इस छात्रा को पीजीटी शिक्षिका स्वेता शर्मा और बीईओ रमेश कुमार ने साखी वाचन के लिए तैयार किया है।

स्वच्छता के लिए गांवों में भी विशेष योजना व रणनीति बनाकर कार्य करने की जरुरत : सुभाष चंद्र

स्वच्छ भारत मिशन हरियाणा के कार्यकारी वाइस चेयरमैन सुभाष चंद्र गांव सम्भालखी आयोजित स्वच्छता चौपाल में पहुंचे बतौर मुख्य अतिथि

डॉ. जरनैल रंगा/गजब हरियाणा

कुरुक्षेत्र। स्वच्छ भारत मिशन हरियाणा के कार्यकारी वाइस चेयरमैन सुभाष चंद्र ने कहा कि धर्मक्षेत्र कुरुक्षेत्र की पूरे विश्व में अपनी एक विशिष्ट पहचान है और मुख्यमंत्री नायब सिंह सैनी का नाम जोड़ने से अब जिला सीएम सिटी के रूप में भी जाना जाने लगा है। ऐसे में स्वच्छता के क्षेत्र में कुरुक्षेत्र की विशेष पहचान बने, इसके लिए शहरों के साथ-साथ गांवों में भी विशेष योजना व रणनीति बनाकर कार्य किए जाने की जरूरत है।

स्वच्छ भारत मिशन हरियाणा के कार्यकारी वाइस चेयरमैन सुभाष चंद्र रविवार को शाहाबाद विधानसभा के गांव सम्भालखी आयोजित स्वच्छता चौपाल में बतौर मुख्य अतिथि बोल रहे थे। उन्होंने ग्रामीणों की समस्याएं सुनीं और अधिकारियों को समाधान के लिए भी कहा। ग्रामीणों ने स्वच्छ भारत मिशन हरियाणा के कार्यकारी वाइस चेयरमैन को आश्वासन देते हुए कहा कि इसके लिए उनका गांव पूरी तरह से तत्पर है और स्वच्छता में अग्रणी स्थान पर लाने के लिए पूरा सहयोग किया जाएगा। सुभाष चंद्र ने कहा कि स्वच्छता एक सामाजिक जिम्मेदारी है। जिसके लिए हम सबको सामूहिक भूमिका निभानी होगी। उन्होंने कुरुक्षेत्र जिला के सभी गांवों की सभी सामाजिक, धार्मिक, व्यापारिक व शैक्षणिक संस्थानों से इस मुहिम से जुड़ने और स्वच्छता को अपने जीवन का अभिन्न अंग बनाने की अपील की। इस मौके पर सरपंच प्रतिनिधि सतीश कुमार, सरपंच जरोली मोती लाल, छोटू सुड़पुर, सुशील, मनीष कुमार, विनोद कुमार, सरपंच अनीता देवी, हरबंस कौर, अधिवक्ता व युवा भाजपा नेता अशोक कुरलन आदि भी मौजूद रहे।

ऑल इंडिया उपलब्धि पर गौरवान्वित हुआ हरियाणा, मानवाधिकार परिषद (भारत) की एनुअल मीट में राज्य को मिला सम्मान

गजब हरियाणा/ब्यूरो

नई दिल्ली/चंडीगढ़। इंडिया हैबिटेट सेंटर, नई दिल्ली में आयोजित मानवाधिकार परिषद (भारत) की वार्षिक बैठक में देशभर के सभी राज्यों के अध्यक्षों ने अपने-अपने राज्यों की वार्षिक रिपोर्ट प्रस्तुत की। इस राष्ट्रीय मंच पर पंजाब और हरियाणा, दोनों राज्यों का चयन ऑल इंडिया लेवल ऑनर स्टेट के रूप में किया गया, जो हरियाणा के लिए अत्यंत गौरव और सम्मान का विषय रहा। इस उल्लेखनीय उपलब्धि के उपलक्ष्य में हरियाणा टीम ने एक निजी होटल में भव्य सम्मान समारोह एवं उत्सव पार्टी का आयोजन किया।

HUMAN RIGHTS COUNCIL (INDIA)
ANNUAL MEET 2025
Best State Award
HARIYANA

कार्यक्रम का संचालन नेशनल सेक्रेटरी उमेश जी तथा स्टेट प्रेसिडेंट निकेश जी के कुशल नेतृत्व में किया गया और यह आयोजन अत्यंत सफलतापूर्वक सम्पन्न हुआ।कार्यक्रम में हरियाणा टीम की ओर से सीमा सिंह (वाइस प्रेसिडेंट), जितेंद्र राणा (मीडिया कोऑर्डिनेटर), सरला (जनरल सेक्रेटरी), राजकुमार पुरी (वाइस प्रेसिडेंट), मीर अखीरा (वाइस प्रेसिडेंट), राखी (जॉइंट सेक्रेटरी) सहित प्रथम, पूजा, वृंदा, सृष्टि, पूनम, मंजू, दीपक, किरण, कमलप्रीत, अक्षिता उप्पल, शिवानी, मीतू, दीप्ति, निशा, आशी, किरण शर्मा एवं सीमा मेहता की गरिमामयी उपस्थिति रही। इस अवसर पर हरियाणा टीम ने संस्था की नेशनल प्रेसिडेंट आरती राजपूत का विशेष रूप से आभार व्यक्त किया और उनके निरंतर मार्गदर्शन को इस उपलब्धि का मूल आधार बताया। साथ ही टीम ने संकल्प लिया कि अगली एनुअल मीट तक संगठन की सदस्य संख्या को और सशक्त बनाया जाएगा तथा हरियाणा को भविष्य में भी ऑल इंडिया स्तर पर अग्रणी स्थान पर बनाए रखा जाएगा।

परमात्मा कोई व्यक्ति नही एक परम चैतन्य शक्ति : महामंडलेश्वर

गजब हरियाणा/राहुल

अंबाला। निराकरी जागृति मिशन के गद्दीनशीन चेयरमैन, संत सुरक्षा मिशन भारत के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष,संत संवारनाथ चैरिटेबल ट्रस्ट बाहरी कुरुक्षेत्र के चेयरमैन और गजब हरियाणा के मार्गदर्शक संत शिरोमणी, दिव्य ज्ञान रत्न, श्री.श्री.1008 महामंडलेश्वर एडवोकेट सतगरु स्वामी ज्ञान नाथ जी महाराज ने कहा कि बहुत नेड़े नाहि दूर। मनुष्य जीवन एक उत्सव है बोझ नही। परमात्मा कोई व्यक्ति नही एक परम चैतन्य शक्ति है। बाहर के दृश्यों का नही भीतर के साक्षी-द्रष्टा का प्रत्यक्ष अनुभव है। प्रदर्शन नही स्वयं का दर्शन है। परमात्मा की कोई विशेष भाषा और परिभाषा नही। परमशांत, परम मौन, परम शून्य निर्गुण निराकार एंव सर्वाधार है। मानने का नही जानने का विषय है। खोजने नही खो जाने की कला है। जो परमात्मा को पाना चाहता है कभी नही पा सकेगा परंतु जो जानना चाहता है सिर्फ वही इस असीम और अनंत हस्ती को उपलब्ध हो सकता है। जहां आप है, वहीं पर, अभी इसी क्षण आप इस ओत-प्रोत जय श्री प्रियतम निर्गुण निराकार एंव सर्वाधार परमतत्व का दर्शन-दीदार और प्रत्यक्ष मे साक्षात्कार कर सकते हो। जहां मैं नही, कोई विचारों और विकारों की उथल-पुथल नही, कोई सीमा और बंधन नही, ईर्षा, द्वेष, खींचातानी, मन और मत का भेदभाव नही बस रह जाता एक है-पना, एक अडिग-अडोल अस्तित्व, आपका अपना आप, एक मस्ती और परमचैतन्य हस्ती। इसी का नाम बेगमपुरा है। इसी खालीपन परमशांत और परम शून्य को दिलोजान और से खुशी से स्वीकार करो। जीवन के मूल तत्व, अध्यात्म के आधार और सार को समझ जाओगे। स्वामी जी ने यह उदगार निराकारी जागृति मिशन आश्रम खतौली मे सप्ताहिक रुहानी सत्संग के दौरान व्यक्त किए।

समाचार

निराश्रित बच्चों को दी जा रही है प्रति माह 2100 रुपये की वित्तीय सहायता : विश्राम कुमार मीणा

डॉ. जरनैल रंगा/गजब हरियाणा

कुरुक्षेत्र। उपायुक्त विश्राम कुमार मीणा ने कहा कि सरकार द्वारा निराश्रित बच्चों को प्रति माह 2100 रुपये की वित्तीय सहायता दी जा रही है। ये सहायता हरियाणा सरकार के सामाजिक न्याय एवं सहकारिता विभाग द्वारा दी जा रही है। योजना का पात्र विभाग में वित्तीय सहायता के लिए आवेदन करके लाभ प्राप्त कर सकता है। उन्होंने कहा कि जिला में 21 वर्ष तक की आयु का बच्चा जो अपने माता-पिता की सहायता अथवा देखभाल से उनकी मृत्यु होने के कारण, अपने पिता के घर से पिछले 2 वर्ष की अवधि से अनुपस्थित होने के कारण अथवा माता-पिता के लम्बी सजा, जोकि एक वर्ष से कम न हो या मानसिक व शारीरिक अक्षमता के कारण वंचित हो जाते हैं और जिनके माता-पिता, अभिभावक की सभी साधनों से वार्षिक आय दो लाख से अधिक नहीं है। उपायुक्त विश्राम कुमार मीणा ने बताया कि उपरोक्त विभाग द्वारा एक परिवार में दो बच्चों तक 2100 प्रति माह प्रति बच्चा पेंशन प्रदान की जा रही है। उपरोक्त स्कीम का लाभ लेने के इच्छुक व्यक्ति के पास बेसहारा होने का प्रमाण पत्र, बच्चों के स्वास्थ्य विभाग द्वारा जारी जन्म प्रमाण पत्र व आवेदक का 5 वर्ष या उससे अधिक की अवधि का हरियाणा राज्य में निवासी होने का दस्तवेज जैसे कि फोटोयुक्त वोटर कार्ड या राशन कार्ड आदि की स्वयं सत्यापित फोटो प्रति सहित परिवार पहचान पत्र होना आवश्यक है। उन्होंने बताया कि आवेदक के पास यदि उपरोक्त दस्तावेजों में से कोई दस्तावेज नहीं है तो वह कोई अन्य प्रमाण पत्र सहित 5 वर्ष से हरियाणा में रिहायश का हलफनामा दे सकता है। यदि बच्चे के माता-पिता या अभिभावक किसी भी सरकार द्वारा पारिवारिक पेंशन प्राप्त कर रहा है वो उपरोक्त स्कीम का लाभ नहीं ले पाएंगे। उन्होंने कहा कि स्कीम का लाभ लेने के इच्छुक प्रार्थी अपने नजदीकी अंत्योदय सरल केंद्र, अटल सेवा केंद्र सहित सीएससी केंद्र पर आवेदन कर सकते हैं।

महिलाओं को श्रीमती सुषमा स्वराज अवार्ड के मिलेंगे 5 लाख रुपये, 15 दिसम्बर तक करें आवेदन: डीसी मीणा

डॉ. जरनैल रंगा/गजब हरियाणा

कुरुक्षेत्र। उपायुक्त विश्राम कुमार मीणा ने कहा कि अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस के अवसर पर महिलाओं को विभिन्न क्षेत्रों में उत्कृष्ट कार्य करने पर विभिन्न अवार्डों से सम्मानित किया जाएगा। इन अवार्डों को पाने की इच्छुक महिलाएं 15 दिसम्बर तक निदेशालय महिला एवं बाल विभाग के पास आवेदन कर सकती हैं। उन्होंने कहा कि 8 मार्च 2026 को अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस पर यह अवार्ड हरियाणा की महिलाओं को उल्लेखनीय कार्यों के लिए दिए जाएंगे। उल्लेखनीय कार्य करने वाली महिलाओं को श्रीमती सुषमा स्वराज अवार्ड के तौर पर 5 लाख रुपये की पुरस्कार राशि दी जाएगी। इस अवार्ड के लिए नामांकित महिला का जन्म हरियाणा में होना चाहिए और महिलाओं के लिए काम किया हो। प्रासंगिक क्षेत्र में नामांकित महिला की उपलब्धि स्पष्ट और अच्छी तरह से प्रलेखित होनी चाहिए। आवेदक महिला नामांकन की तिथि को जीवित होना चाहिए। नामांकित महिला की उपलब्धि को सत्यापित किया जाना वस्तुनिष्ठ मूल्यांकन के अधीन होना चाहिए। उन्होंने कहा कि इस पुरस्कार के लिए उन महिलाओं को प्राथमिकता दी जाएगी, जो काफी संघर्ष और विपरीत परिस्थितियों के बाद जीवन की मुख्यधारा में आई है।

घरौंडा में अतिक्रमण पर सख्ती, एसडीएम राजेश सोनी ने व्यापारियों को दी चेतावनी, सड़क पर सामान नहीं रखेंगे दुकानदार

अमित बंसल/गजब हरियाणा

घरौंडा। शहर में बढ़ते अतिक्रमण को रोकने और जनसुविधाओं को बहाल रखने के उद्देश्य से सोमवार को घरौंडा नगर पालिका कार्यालय में एक विशेष बैठक आयोजित की गई। बैठक की अध्यक्षता उपमंडल अधिकारी (एसडीएम) राजेश सोनी ने की। बैठक में नगर पालिका अध्यक्ष हैप्पी लक गुप्ता, नगर पालिका सचिव रवि प्रकाश शर्मा, पार्षदगण तथा शहर के प्रमुख दुकानदारों ने भाग लिया।बैठक के दौरान एसडीएम राजेश सोनी ने स्पष्ट निर्देश दिए कि कोई भी दुकानदार या व्यापारी अपने प्रतिष्ठान का सामान दुकान के बाहर या सड़क पर न रखे। उन्होंने कहा कि सड़कें पैदल चलने वालों और यातायात के लिए बनी हैं, न कि दुकान का विस्तार करने के लिए। अतिक्रमण से जनता को परेशानी होती है और ट्रैफिक बाधित होता है, इसलिए सभी दुकानदार तय सीमा के भीतर ही व्यापार करें। नगर पालिका सचिव रवि प्रकाश शर्मा ने बताया कि बैठक में सभी दुकानदारों को सख्त हिदायत दी गई है कि वे अपना सामान दुकान के अंदर ही रखें। यदि कोई भी दुकानदार निर्देशों का उल्लंघन करेगा तो नगर पालिका द्वारा उसका चालान किया जाएगा और आवश्यक कार्रवाई अमल में लाई जाएगी। नगर पालिका अध्यक्ष हैप्पी लक गुप्ता ने भी कहा कि प्रशासन और व्यापारी आपसी सहयोग से शहर को स्वच्छ और व्यवस्थित बनाए रखें। उन्होंने कहा कि साफ-सुथरा और अतिक्रमण-मुक्त घरौंडा ही स्मार्ट घरौंडा की दिशा में पहला कदम है।

कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय में सर्टिफिकेट कोर्स इन स्पोर्ट्स डाइटीशियन पाठ्यक्रम में प्रवेश हेतु अधिसूचना जारी

सृष्टि/गजब हरियाणा

कुरुक्षेत्र। कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय के शारीरिक शिक्षा विभाग में सत्र 2025-26 के लिए सर्टिफिकेट कोर्स इन स्पोर्ट्स डाइटीशियन में प्रवेश हेतु अधिसूचना जारी की गई है। तीन माह की अवधि का प्रमाणपत्र पाठ्यक्रम इवनिंग सेशन में सेल्फ-फाइनेंसिंग स्कीम के अंतर्गत संचालित किया जाएगा। प्रवेश कार्यक्रम के अनुसार ऑनलाइन आवेदन प्रक्रिया 20 दिसंबर, 2025 से प्रारंभ होगी तथा आवेदन की अंतिम तिथि 7 जनवरी, 2026 (रात्रि 11.59 बजे तक) निर्धारित की गई है। लोक सम्पर्क विभाग के निदेशक प्रो. महासिंह पूनिया ने बताया कि सर्टिफिकेट कोर्स इन स्पोर्ट्स डाइटीशियन पाठ्यक्रम में कुल 30 सीटें तथा 17 सुपरन्यूमैरेरी सीटें निर्धारित की गई हैं।

पाठ्यक्रम में प्रवेश क्वालीफाइंग परीक्षा की मेरिट एवं नियमानुसार वेटेज के आधार पर किया जाएगा। पाठ्यक्रम में प्रवेश के लिए न्यूनतम योग्यता किसी भी विषय में 102 परीक्षा 55 प्रतिशत अंकों के साथ उत्तीर्ण होना निर्धारित की गई है। इच्छुक अभ्यर्थी विश्वविद्यालय की वेबसाइट अथवा प्रवेश पोर्टल के माध्यम से ऑनलाइन आवेदन कर सकते हैं। सामान्य वर्ग के लिए आवेदन शुल्क 1200 रुपये तथा हरियाणा राज्य के एससी/बीसी वर्ग के अभ्यर्थियों के लिए 300 रुपये निर्धारित किया गया है। प्रो. महासिंह पूनिया ने बताया कि चयनित अभ्यर्थियों की पहली सूची 8 जनवरी 2026 को प्रातः 10 बजे विश्वविद्यालय वेबसाइट/ आईयूएमएस पोर्टल पर प्रदर्शित की जाएगी। चयनित अभ्यर्थियों के मूल प्रमाणपत्रों का सत्यापन 8 व 9 जनवरी 2026 को शारीरिक शिक्षा विभाग में किया जाएगा। उन्होंने बताया कि रिक्त सीटों के लिए सूची 12 जनवरी, 2026 को दोपहर 12.30 बजे विभागीय सूचना पट्ट व विश्वविद्यालय वेबसाइट पर प्रदर्शित की जाएगी। शुल्क जमा करने की अंतिम तिथि 13 जनवरी, 2026 निर्धारित की गई है, जबकि कक्षाएं 15 जनवरी 2026 से प्रारंभ होंगी। उन्होंने बताया कि तीन माह की अवधि के पाठ्यक्रम की कुल फीस 6300 रुपये निर्धारित की गई है। पाठ्यक्रम से संबंधित विस्तृत जानकारी हैंडबुक ऑफ इंफॉर्मेशन (एच.बी.आई.-25) में उपलब्ध है।

कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय
कुरुक्षेत्र
श्रीकृष्ण द्वार

श्रीमद्भगवद्गीता स्वार्थ से ऊपर उठकर धर्म और कर्तव्य को प्राथमिकता देने की शिक्षा देता है: डॉ. श्रीप्रकाश मिश्र

श्रीमद्भगवद्गीता में परिवार प्रबंधन विषय पर मातृभूमि शिक्षा मंदिर द्वारा गीता कुटुंब संवाद कार्यक्रम संपन्न

सृष्टि/गजब हरियाणा

कुरुक्षेत्र। श्रीमद्भगवद्गीता की शिक्षाएं आज के आधुनिक परिवारों के लिए बहुत प्रासंगिक हैं। आज जब रिश्तों में तनाव, अपेक्षाओं का टकराव और व्यक्तिगत स्वतंत्रता के मुद्दे आम हैं तो ऐसी परिस्थिति में गीता हमें इन चुनौतियों से भागने के बजाय, जागरूकता, कर्तव्यनिष्ठा और प्रेम के साथ उनका सामना करना सिखाती है, जिससे गहरे और स्थायी पारिवारिक बंधन बनते हैं। यह विचार मातृभूमि सेवा मिशन के संस्थापक डॉ. श्रीप्रकाश मिश्र ने श्रीमद्भगवद्गीता में परिवार प्रबंधन विषय पर मातृभूमि शिक्षा मंदिर द्वारा आयोजित गीता कुटुंब संवाद कार्यक्रम में व्यक्त किये। कार्यक्रम का शुभारम्भ कल्याण मंत्र से हुआ।

डॉ. श्रीप्रकाश मिश्र ने कहा गीता में परिवार प्रबंधन का अर्थ है कर्तव्य परायणता, निष्काम कर्म, आत्म नियंत्रण और करुणा के सिद्धांतों का पालन करते हुए पारिवारिक जिम्मेदारियों को निभाना। जहां व्यक्ति अपने व्यक्तिगत लगाव को त्याग कर, फल की चिंता किए बिना, सभी के कल्याण के लिए कार्य करता है और रिश्तों में संतुलन व शांति बनाए रखता है। जिससे व्यक्तिगत और पारिवारिक दोनों जीवन में सफलता मिलती है। श्रीमद्भगवद्गीता स्वार्थ से ऊपर उठकर धर्म और कर्तव्य को प्राथमिकता देने की शिक्षा देता है। कार्यक्रम के अतिविशिष्ट डॉ. प्रदीप राय ने कहा श्रीमद्भागवत गीता में प्रतिपादित जीवन प्रबंधन, वेदों का सारभूत श्रीमद्भगवद्गीता हमारे जीवन का मार्ग-निर्देशक है। यह एक व्यावहारिक मनोविज्ञान है जो हमें जीवन रूपी संग्राम में विजय प्राप्त करने हेतु वास्तविक दिशा प्रदान करता है। कार्यक्रम को सुनील भट्ट एवं श्रीमती गीता ने बतौर विशिष्ट अतिथि सम्बोधित किया। श्रीमती साधना ने सुमधुर भजन प्रस्तुत किया। मातृभूमि शिक्षा मंदिर के विद्यार्थियों ने सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किये। माता श्रीमती सुदेश ने कार्यक्रम में आशीर्वचन दिया। सभी अतिथियों को आश्रम परिवार की ओर से स्मृति चिन्ह एवं से अंग वस्त्र भेंट किया गया। कार्यक्रम का समापन शांति पाठ से हुआ।

प्रकाशक , सम्पादक एवं मुद्रक जरनैल सिंह द्वारा मेसर्स डी बी कार्प लिमिटेड प्लाट न.42-43 सेक्टर - 29, हुडा,पानीपत से छपवाकर कार्यालय 'गजब हरियाणा' कोठी नं. 890 पी, सेक्टर - 4, अर्बन एस्टेट कुरुक्षेत्र जिला कुरुक्षेत्र, हरियाणा से प्रकाशित व मुद्रक किया। सम्पादक जरनैल सिंह (9138203233), Registretion Namber: HAR/HIN/2018/77311